वार्षिक 300/- रूपए
website : www.vhp.org

मूल्य 15 रूपए
कुल पृष्ठ - 28

राष्ट्रीय पुनर्जागरण का पाक्षिक

अप्रैल 01-15, 2026

हिन्दू विश्व

समृद्ध भारत के लिए आवश्यक है

भारतीय गोवंश

हरिद्धार में 7-8 मार्च को आयोजित विश्व के हिंदू शिक्षाविदों के राष्ट्रीय सम्मेलन में उपस्थित
केन्द्रीय अध्यक्ष मा. आलोक कुमार जी, संगठन महामंत्री श्री मिलिंद जी पराण्डे, विहिप संयुक्त महामंत्री स्वामी विज्ञानानंद जी

भाग्यनगर (तेलंगाना) में आयोजित बजरंग दल के अ.भा. शिक्षक प्रशिक्षण वर्ग को संबोधित करते
विहिप संगठन महामंत्री श्री मिलिंद जी पराण्डे तथा वर्ग में उपस्थित शिक्षार्थी

चित्तौड़गढ़ में विहिप, बजरंग दल, मातृशक्ति एवं दुर्गावाहिनी (चित्तौड़गढ़ विभाग) के तत्वावधान में इंदिरा प्रियदर्शिनी
ऑडिटोरियम में 'समरसता संगोष्ठी : संगत और पंगत' कार्यक्रम को संबोधित करते विहिप सह संगठन महामंत्री
श्री विनायकराव देशपाण्डे तथा कार्यक्रम में उपस्थित मातृशक्ति एवं बन्धु

विहिप विशेष संपर्क विभाग द्वारा 09 मार्च से प्रारंभ हुए
सांसद संपर्क अभियान को लेकर प्रेसवार्ता को संबोधित
करते विहिप महामंत्री श्री बजरंग लाल बागड़ा जी

नागपुर में विश्व हिन्दू परिषद के भवन का शिलान्यास करते
पू. सरसंघचालक डॉ. मोहन राव भागवत जी

हिन्दू विश्व
राष्ट्रीय पुनर्जागरण का पाक्षिक

हे इन्द्रदेव ! पर्वत के पृष्ठभाग से जिस प्रकार जल प्रवाहित होता है, वैसे ही यज्ञ कर्म एवं स्तुति करने से मनुष्यों को आपके द्वारा मनोवांछित फल प्राप्त होता है। हे स्तुतियों से पूजनीय इन्द्रदेव! जिस प्रकार युद्ध क्षेत्र में अश्व तीव्र वेग से जाते हैं, उसी प्रकार अन्न प्राप्ति की इच्छा वाले भरद्वाज आदि आपके पास पहुँचते हैं। – ऋग्वेद

01–15 अप्रैल, 2026
चैत्र शुक्ल-वैशाख कृष्ण पक्ष
रौद्रसंवत्सर
वि. सं. – 2083, युगाब्द– 5128

सम्पादक
विजय शंकर तिवारी

सह सम्पादक
मुरारी शरण शुक्ल
मो. – 7217685539

परामर्शदाता
सर्वश्री राजेन्द्र शर्मा,
विजय कुमार,
रवि पाराशर

व्यवस्थापक
श्री दूधनाथ शुक्ल
मो. – 09582555152

सज्जा
श्री महेश कुशवाहा

कार्यालय :
'हिन्दू विश्व'
संकटमोचन आश्रम, प्रभाग – 6
रामकृष्णपुरम्,
नई दिल्ली–110022–05
दूरभाष : 09582555152

011–26178992, 011–26103495
hinduvishva@vhp.org

– : मूल्य :–

विदेशों के लिए	$ 75 USD
वार्षिक डाक व्यय सहित	
एक प्रति	15/–
वार्षिक	300/–
त्रिवर्षीय	750/–
पंचवर्षीय	1,200/–
दसवर्षीय	2,250/–
पन्द्रह वर्षीय	3,100/–

पत्रिका की सदस्यता हेतु क्यूआर कोड स्कैन करें, उसका स्क्रीन शॉट और अपना पता व्यवस्थापक को 9582555152 नम्बर पर भेजें।

वैधानिक सूचना

- 'हिन्दू विश्व' में प्रकाशित सामग्री लेखकों के निजी विचार हैं। सम्पादक एवं प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।
- 'हिन्दू विश्व' से सम्बन्धित सभी वाद प्रकाशन तिथि से 3 महीने के अन्दर केवल नई दिल्ली स्थित न्यायालय में होंगे।

कुल पेज – 28

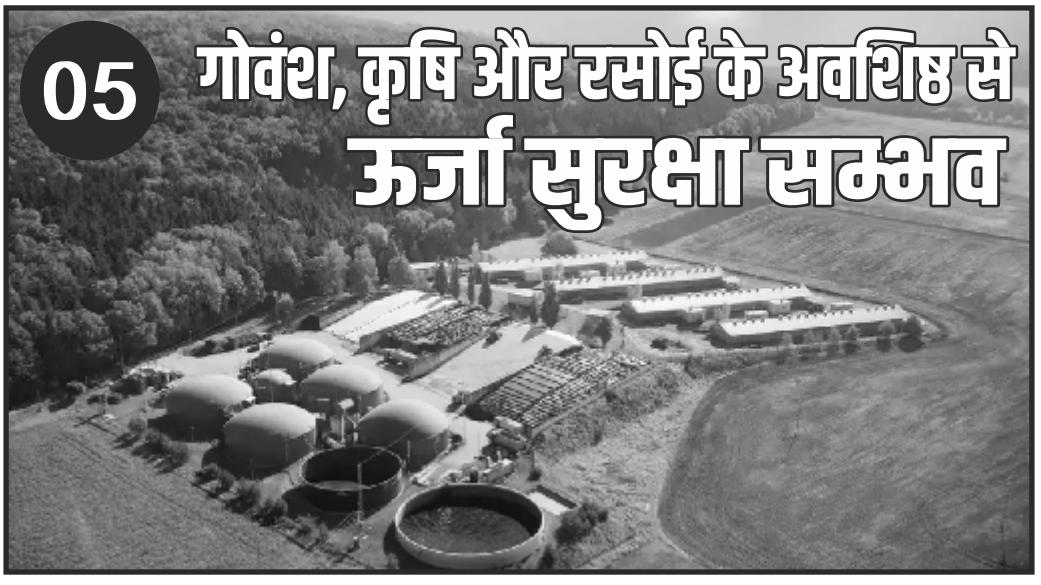

05 गोवंश, कृषि और रसोई के अवशिष्ट से ऊर्जा सुरक्षा सम्भव

हिंदू और हिंदुत्व आधुनिक बोध	08
पारंपरिक मेलों पर संकट सुरक्षा और आजीविका के बीच संतुलन की तलाश	11
पंच परिवर्तन कार्यक्रम से समाज परिवर्तन सम्भव है	13
अब आतंकवाद पर होगा निर्णायक 'प्रहार'	15
राजस्थान के डिस्टर्ब्ड एरिया बिल पर राजनीति	17
जब अभिनेत्री मुमताज ने कहा "मुसलमान हिंदुओं से बेहतर कैसे हो जाते हैं?"	19
उन्माद एक मानसिक रोग	21
हिंदुओं को जिहादियों की भाषा में उत्तर देने को विवश न किया जाए	22
विहिप का सांसद संपर्क अभियान शुरु	23
एक संगत व पंगत से अपनत्व बढ़ता है – विनायक राव देशपांडे	24
संघ के विस्तार का अर्थ राष्ट्रीय विचार का विस्तार : दत्तात्रेय होसबाले जी	25
नागपुर में विश्व हिन्दू परिषद के भवन का शिलान्यास समारोह	26

सुभाषित

अविनीतस्य या विद्या सा चिरं नैव तिष्ठति।
मर्कटस्य गले बद्धा मणीनां मालिका यथा।

अशिष्ट (अविनीत) व्यक्ति का ज्ञान वास्तव में अधिक समय तक स्थिर नहीं रहता–जैसे बंदर के गले में बांधी गई रत्नों की माला।

सम्पादकीय

विजय शंकर तिवारी

विध्वंसक होते वैश्विक माहौल में एकात्मवादी हिंदुत्व से राह दिखाने की अपेक्षा

वर्तमान वैश्विक परिदृश्य दिनोंदिन अधिक अस्थिर और विध्वंसक होता जा रहा है। विशेष रूप से इज़राइल, ईरान, अमेरिका, अरब जगत और कतर जैसे क्षेत्रों में बढ़ते तनाव और युद्ध जैसी स्थितियों ने पूरे विश्व को गहरे संकट में डाल दिया है। ये संघर्ष केवल सीमित भू–राजनीतिक विवाद नहीं रह गए हैं, बल्कि इनका प्रभाव वैश्विक अर्थव्यवस्था, ऊर्जा आपूर्ति, सामाजिक स्थिरता और मानव जीवन पर व्यापक रूप से पड़ रहा है।

मध्य–पूर्व में लगातार बढ़ती शत्रुता, प्रतिशोध की राजनीति और शक्ति प्रदर्शन की प्रवृत्ति यह संकेत देती है कि आधुनिक विश्व अब भी अहंकार, वर्चस्व और विभाजनकारी सोच के जाल में फंसा हुआ है। जब इज़राइल और ईरान जैसे राष्ट्र आमने–सामने होते हैं, या अमेरिका और अरब जगत के बीच सामरिक समीकरण बदलते हैं, तो इसका प्रभाव केवल उन देशों तक सीमित नहीं रहता–पूरी मानवता इसकी कीमत चुकाती है। कतर जैसे छोटे लेकिन सामरिक रूप से महत्वपूर्ण देश भी इस खींचतान में अस्थिरता के केंद्र बन जाते हैं।

यह समूचा परिदृश्य इस बात का प्रमाण है कि केवल शक्ति संतुलन, सैन्य गठबंधन और आर्थिक दबाव के माध्यम से स्थायी शांति स्थापित नहीं की जा सकती। जब तक मानवता के मूल चिंतन में परिवर्तन नहीं होगा, तब तक संघर्ष और विनाश का यह चक्र चलता रहेगा। ऐसे समय में भारतीय दर्शन, विशेषकर एकात्मवादी हिंदुत्व, विश्व को एक नई दिशा देने की क्षमता रखता है।

एकात्मवादी हिंदुत्व का मूल सिद्धांत है–समस्त सृष्टि में एक ही चेतना का वास। "वसुधैव कुटुम्बकम्" का भाव केवल एक आदर्श वाक्य नहीं, बल्कि एक जीवन पद्धति है। यदि इज़राइल और ईरान जैसे राष्ट्र एक–दूसरे को शत्रु नहीं, बल्कि एक ही वैश्विक परिवार के सदस्य के रूप में देखें, तो संघर्ष की तीव्रता स्वतः कम हो सकती है। इसी प्रकार, अमेरिका और अरब जगत के बीच प्रतिस्पर्धा की बजाय सहयोग की भावना विकसित हो, तो वैश्विक स्थिरता को नया आधार मिल सकता है।

आज का सबसे बड़ा संकट यह है कि विभिन्न विचारधाराएँ स्वयं को अंतिम सत्य मानकर दूसरों को नकारने का प्रयास कर रही हैं। यही कारण है कि संवाद की जगह टकराव ने ले ली है। हिंदुत्व का सिद्धांत *"एकं सद् विप्राः बहुधा वदन्ति"* इस समस्या का समाधान प्रस्तुत करता है। यह सिखाता है कि सत्य एक है, परंतु उसे समझने के अनेक मार्ग हो सकते हैं। यदि इस विचार को वैश्विक कूटनीति और सामाजिक व्यवहार में स्थान मिले, तो विचारों के टकराव को संवाद में बदला जा सकता है।

पर्यावरणीय और आर्थिक संकट भी इन युद्धों के कारण और गहराते जा रहे हैं। तेल और गैस के संसाधनों पर निर्भरता, आपूर्ति में बाधा और वैश्विक बाजार की अस्थिरता ने आम जनजीवन को प्रभावित किया है। एकात्मवादी हिंदुत्व प्रकृति के साथ संतुलन और संयमित उपभोग का संदेश देता है। यह दृष्टिकोण न केवल संसाधनों के न्यायपूर्ण वितरण को प्रोत्साहित करता है, बल्कि युद्धों की जड़ में छिपी लालसा को भी नियंत्रित करने का मार्ग दिखाता है।

सामाजिक समरसता के स्तर पर भी हिंदुत्व का योगदान महत्वपूर्ण है। जब हम हर व्यक्ति में एक ही आत्मा का दर्शन करते हैं, तब जाति, पंथ, भाषा या राष्ट्र के आधार पर भेदभाव का कोई स्थान नहीं रह जाता। यही भावना वैश्विक स्तर पर शांति और सहयोग की नींव रख सकती है।

आज आवश्यकता इस बात की है कि भारत अपने इस प्राचीन और सार्वभौमिक दर्शन को विश्व मंच पर और अधिक प्रभावी ढंग से प्रस्तुत करे। योग और आयुर्वेद की तरह, एकात्मवादी हिंदुत्व को भी एक वैकल्पिक वैश्विक विचारधारा के रूप में स्थापित किया जाना चाहिए–जो केवल भारत के लिए नहीं, बल्कि समस्त मानवता के कल्याण के लिए है।

अंततः, इज़राइल, ईरान, अमेरिका, अरब जगत और क़तर के बीच उत्पन्न हो रहे तनाव यह स्पष्ट करते हैं कि वर्तमान विश्व व्यवस्था में गहरे वैचारिक परिवर्तन की आवश्यकता है। एकात्मवादी हिंदुत्व, अपने समन्वय, सहिष्णुता और एकता के संदेश के साथ, इस परिवर्तन का आधार बन सकता है। यदि विश्व इस दिशा में आगे बढ़ता है, तो विध्वंस की इस अंधेरी राह से निकलकर शांति, संतुलन और सह–अस्तित्व की ओर अग्रसर होना संभव है।

पर्यावरणीय और आर्थिक संकट भी इन युद्धों के कारण और गहराते जा रहे हैं। तेल और गैस के संसाधनों पर निर्भरता, आपूर्ति में बाधा और वैश्विक बाजार की अस्थिरता ने आम जनजीवन को प्रभावित किया है। एकात्मवादी हिंदुत्व प्रकृति के साथ संतुलन और संयमित उपभोग का संदेश देता है। यह दृष्टिकोण न केवल संसाधनों के न्यायपूर्ण वितरण को प्रोत्साहित करता है, बल्कि युद्धों की जड़ में छिपी लालसा को भी नियंत्रित करने का मार्ग दिखाता है।

गोवंश, कृषि और रसोई के अवशिष्ट से ऊर्जा सुरक्षा सम्भव

मुरारी शरण शुक्ल
सह सम्पादक हिन्दू विश्व

इजरायल–अमेरिका इरान युद्ध के कारण स्ट्रेट ऑफ होर्मुज बंद हो गया है। यहाँ से सम्पूर्ण विश्व की ऊर्जा आवश्यकताओं की 20–25 प्रतिशत तेल, एलएनजी, एलपीजी आपूर्ति होती है। इरान द्वारा स्ट्रेट ऑफ होर्मुज बंद कर दिए जाने से दुनियाँ भर में डीजल, पेट्रोल, एलएनजी, एलपीजी, विमान इंधन इत्यादि की कमी हो गई है, इनकी कीमतें बढ़ने लग गई हैं, इन उर्जाओं पर आधारित उत्पादन और ट्रांसपोर्ट के साधन महंगे होने से उत्पादों सेवाओं और वस्तुओं का मुल्य बढ़ने लग गया है, थोक और खुदरा दोनों महंगाई बढ़ रही है, मुद्रा स्फिति बढ़ रही है, दुनियाँ भर की अर्थव्यवस्थाएँ प्रभावित होने लगी हैं। भारत, चीन, जापान और पाकिस्तान जैसे देश जो ऊर्जा आवश्यकताओं के लिए आयात पर निर्भर हैं, उनको अधिक कठिनाईयों का सामना करना पड़ रहा है।

भारत में गोबर गैस उत्पादन और सम्भावनाएँ

भारत में वर्तमान में संचालित 5.1 मिलियन घरेलू एवं सामुदायिक गोबर गैस प्लांट से 2.07 बिलियन से 3.2 बिलियन क्यूबिक मिटर प्रतिवर्ष बायोगैस का उत्पादन होता है। अभी जितने बायोगैस प्लांट उपयोग में हैं, उनसे 4.43 मिलियन मेट्रिक टन बायो गैस का उत्पादन किया जा सकता है। देश में 300 मिलियन टन गाय का गोबर प्रतिवर्ष होता है। इसके साथ फसलों के पार्श्व उत्पाद का मिश्रण करके उपयोग होता है बायोगैस प्लांट में। SATAT scheme के अंतर्गत कम्प्रेस्ड बायोगैस (CBG) का उत्पादन सतत बढ़ाया जा रहा है। देश में 62 मिलियन मेट्रिक टन बायो गैस उत्पादन कर सकने की सम्भावीत क्षमताएँ हैं।

एलपीजी की वार्षिक खपत

भारत में वार्षिक एलपीजी खपत लगभग 31–33 मिलियन मीट्रिक टन है, जो देश को विश्व स्तर पर दूसरा सबसे बड़ा एलपीजी उपभोक्ता बनाती है। इस मांग का लगभग 60–67 प्रतिशत हिस्सा आयात के माध्यम से पूरा किया जाता है, जिसमें मुख्य रूप से खाड़ी देशों और हाल ही में अमेरिका से आपूर्ति की जाती है।

एलपीजी आयात पर वार्षिक व्यय

भारत में एलपीजी आयात का वार्षिक खर्च लगातार बढ़ रहा है, जो वित्त वर्ष 2024–25 में रु. 1.06 लाख करोड़ के रिकॉर्ड स्तर पर पहुँच गया है। यह भारत के कुल पेट्रोलियम आयात व्यय का लगभग 53 प्रतिशत है, क्योंकि देश अपनी खपत का 65 प्रतिशत से अधिक आयात पर निर्भर है। इस बोझ को कम करने के लिए, सरकार ने 2025–26 में सब्सिडी के लिए रु. 12,000 करोड़ आवंटित किए हैं।

एलपीजी पर सरकारी सब्सिडी और सहायता

PMUY सब्सिडी : प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना के अन्तर्गत 2025–26 के लिए रु.12,000 करोड़ की प्रत्यक्ष सब्सिडी निर्धारित की गई है। तेल कंपनियों को मुआवजा : ओएमसी को होने वाले नुकसान की भरपाई के लिए रु. 7,500–10,000 करोड़ का वार्षिक मुआवजा दिया जाता है।

गोवंश की रक्षा से ऊर्जा सुरक्षा बढ़ेगी

बीफ निर्यात पर प्रभावी रोक लगाने से गोबर देने वाले जंतुओं की सँख्या बढ़ेगी, तो गोबर उत्पादन बढ़ेगा, बायोगैस का उत्पादन बढ़ेगा, इससे दुग्ध उत्पादन भी बढ़ेगा। भारत एक ओर ऊर्जा आवश्यकताओं के लिए चिन्तामुक्त हो जाएगा, दूसरी तरफ देश की अर्थव्यवस्था को भी बल मिलेगा। भारत में एलपीजी खपत प्रतिवर्ष होता है 33 मिलियन मेट्रीक टन और बायोगैस उत्पादन की हमारी सम्भावित क्षमता है 62 मिलियन मेट्रीक टन की। अर्थात हम अपनी आवश्यकता से अतिरिक्त और लगभग दोगुना बायोगैस बना सकते हैं, इस अतिरिक्त बायोगैस का देश के औद्योगिक उत्पादन या ट्रांसपोर्ट में उपयोग हो सकता है। आजकल बायोगैस से संचालित होने वाले विद्युत उत्पादन के जेनरेटर भी बनने लगे हैं।

डेयरी उद्योग से वार्षिक आय

भारत का डेयरी उद्योग दुनियाँ में सबसे बड़ा है, जो वैश्विक उत्पादन में 25 प्रतिशत का योगदान देता है। 2024 में भारतीय डेयरी बाजार का मूल्य रु. 18,975 अरब (18.97 लाख करोड़ रुपये) से अधिक था, जिसमें 9.1 प्रतिशत से

अधिक की मजबूत वार्षिक वृद्धि दर (CAGR) देखी जा रही है और यह कृषि जीडीपी का 30 प्रतिशत हिस्सा है।

जैविक दूध पाउडर का वार्षिक व्यापार

डीप मार्केट इनसाइट्स के अनुसार, भारतीय जैविक दूध पाउडर बाजार का मूल्य 2024 में 114.19 मिलियन अमेरिकी डॉलर था, और 2033 तक 4.97 प्रतिशत की सीएजीआर से बढ़कर 177.03 मिलियन अमेरिकी डॉलर तक पहुँचने का अनुमान है। डेयरी क्षेत्र विशाल है, जिसमें कुल दूध उत्पादन 239 मिलियन टन (2023–24) से अधिक है (खाद्य प्रसंस्करण उद्योग मंत्रालय)।

पराली से सम्भावित बायोगैस उत्पादन

प्रति टन उपज : 1 टन धान की पराली से लगभग 300 से 450 घन मीटर कच्ची बायोगैस प्राप्त की जा सकती है।

प्रति किलोग्राम उपज : आधुनिक तकनीकों के माध्यम से, 1 किलोग्राम पराली से 300 से 500 लीटर तक बायोगैस का उत्पादन संभव है।

कुल राष्ट्रीय क्षमता : भारत में हर साल लगभग 234 मिलियन मीट्रिक टन अतिरिक्त कृषि अवशेष उत्पन्न होते हैं, जिनसे अनुमानित 20 मिलियन मीट्रिक टन कंप्रेस्ड बायोगैस बनाई जा सकती है।

बायोगैस के विकल्प के मुख्य बिंदु

स्थानीय उत्पादन : गोबर, रसोई का गीला कचरा, खराब सब्जियाँ और फलों के छिलकों का उपयोग करके घर पर ही छोटा बायोगैस प्लांट लगाया जा रहा है।

लागत और सब्सिडी : घरेलू प्लांट की लागत लगभग 15,000 से 50,000 रुपये तक हो सकती है, जबकि कमर्शियल सेटअप में 19–20 लाख तक का खर्चा आ सकता है। वहीं, सरकार इन संयंत्रों पर सब्सिडी भी प्रदान कर रही है।

तकनीक : पोर्टेबल बायोगैस सिस्टम का उपयोग करना आसान है, जो अवायवीय पाचन के माध्यम से कचरे को मीथेन में बदलते हैं।

दोहरा लाभ : खाना पकाने की गैस के अलावा, इससे निकलने वाले अवशेष का उपयोग पौधों के लिए बेहतरीन जैविक खाद के रूप में किया जा सकता है। (अमर उजाला)

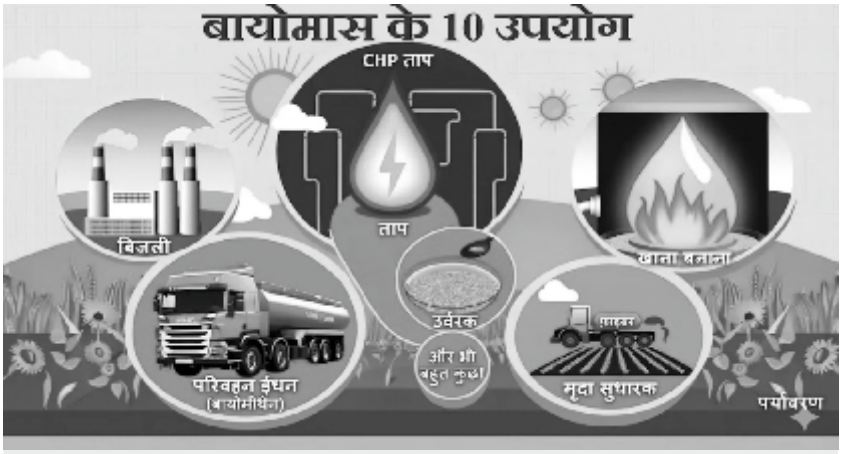

जनता स्वयं चुन रही है बायोगैस का विकल्प

amarujala.com ने 17 मार्च को एक समाचार प्रकाशित किया कि कचरे से एलपीजी बनाने की दिशा में दिल्ली वासियों ने बढ़ाए कदम। समाचार पत्र ने लिखा कि एलपीजी सिलिंडर की किल्लत के बीच लोग वैकल्पिक ऊर्जा स्रोत तलाश रहे हैं। ऐसे में कचरे से गैस बनाने के लिए दिल्लीवासी ओखला स्थित बायोगैस प्लांट पहुँच रहे हैं। घरेलू और व्यावसायिक बायोगैस सेटअप के बारे में पूछताछ कर रहे हैं। अखबार ने लिखा कि ओखला स्थित परफेक्ट बायोगैस एंड पावर मैनेजमेंट प्राइवेट लिमिटेड की प्लांट हेड पुनीता सिंह के अनुसार, रोजाना करीब 400–500 लोग घरेलू बायोगैस प्लांट लगाने के लिए संपर्क कर रहे हैं, जबकि 50 से अधिक कॉल कमर्शियल बायोगैस सेटअप के लिए आ रही हैं। यह पहल शहरों में लैंडफिल कचरे को कम करने में भी मदद कर सकती है।

इन रेलवे स्टेशनों पर प्रयोग

प्रयागराज स्टेशन और कानपुर स्टेशन में पोर्टेबल बायोगैस संयंत्र लगाए गए हैं। यहाँ की रसोइयों में लोकोमोटिव पायलट (ट्रेन चालक) के लिए भोजन तैयार किया जाता है। अब तक देश के कई बड़े डेयरी फार्म और पोल्ट्री फार्म में 500 से अधिक बायोगैस प्लांट स्थापित किए हैं।

मेरे गाँव में था एक गोबर गैस प्लांट

आज के पचास साल पहले मेरे गाँव में एक गोबर गैस प्लांट था, उस परिवार के घर में भोजन गोबर गैस से संचालित चुल्हे पर बनता था, पुरे घर में गोबर गैस से लाइट जलता था, पेट्रोमैक्स की तरह मेंटल बांधकर उसको जलाना पड़ता था। जब गाँव में बिजली नहीं थी, तब भी उनका घर गोबर गैस के कारण जगमग रहता था। उन दिनों एलपीजी सिलिंडर का चलन भी नहीं था, लेकिन हमने इस देशी और नवीनीकरण की जा सकने वाले ऊर्जा स्रोत की अनदेखी की और आज एलपीजी, एलएनजी पर आश्रित हो गए, इसी कारण आज इस युद्ध जनित ऊर्जा संकट के समय में हमें पुनः अपना बायोगैस उत्पादन पोटेंशियल स्मरण हो रहा है।

भारत के शीर्ष गोबर गैस संयंत्र

संगरूर सीबीजी प्लांट (पंजाब) : लेहरागागा में स्थित, यह भारत का सबसे बड़ा बायो–सीएनजी प्लांट है, जो प्रतिदिन 33.23 टन (टीपीडी) सीबीजी का उत्पादन करता है।

इंदौर बायो–सीएनजी प्लांट (मध्य प्रदेश) : जैविक कचरे को संसाधित करने वाला 550 टीपीडी का यह संयंत्र एशिया के सबसे बड़े नगरपालिका ठोस अपशिष्ट आधारित संयंत्रों में से एक के रूप में जाना जाता है।

ग्वालियर सीबीजी प्लांट (मध्य प्रदेश) : लालटिपारा गौशाला में स्थित 100 टीपीडी मवेशी गोबर आधारित संयंत्र।

पटियाला आरएनजी प्राइवेट लिमिटेड (पंजाब) : एवरएनविरो द्वारा प्रबंधित 20 टीपीडी सीबीजी संयंत्र।

संगरूर आरएनजी प्राइवेट लिमिटेड (पंजाब) : फतेहगढ़ में 20 टीपीडी सीबीजी संयंत्र।

रिलायंस सीबीजी प्लांट (होशियारपुर, पंजाब) : बरोटी गाँव में स्थित 20 टीपीडी क्षमता वाला संयंत्र।

फार्म गैस प्राइवेट लिमिटेड (लुधियाना, पंजाब) : एक 12 टीपीडी सीबीजी संयंत्र।

बरसाना सीबीजी प्लांट (उत्तर प्रदेश) : मथुरा में स्थित एक बड़े पैमाने का संयंत्र (बनास डेयरी द्वारा शुरू किया गया)।

मीथेन बायोगैस संयंत्र (गुजरात) : सिद्धपुर में स्थित एक ऐतिहासिक रूप से महत्वपूर्ण, बड़े पैमाने का संयंत्र।

बरकोट बायोगैस संयंत्र (उत्तराखंड) : देहरादून में स्थित एक प्रमुख स्थानीय संयंत्र जो 85 घन मीटर बायोगैस का संचालन करता है।

गोरक्षक वस्तुत: ऊर्जा रक्षक हैं

गाय और गोवंश की रक्षा करने से गोबर उत्पादन बढ़ेगा, और गोबर अधिक होने से बायोगैस उत्पादन अधिक होगा, और इसके बलपर हम अपनी ऊर्जा आवश्यकताएँ शत प्रतिशत पूरी कर पायेंगे बिना विदेशी मुद्रा खर्च किए, बिना आयात किए। इससे अर्थव्यवस्था मजबूत और स्वावलम्बी होगा। हम यह ऊर्जा टैंकरों, जहाजों में भरकर विदेशों में निर्यात भी कर पाएंगे। यह ऊर्जा प्रदूषण रहित है, पर्यावरण हितैषी है और पुनः पुनः उत्पादित हो सकती है, यह डीजल, पेट्रोल, एलपीजी, एलएनजी, कोयला की तरह सीमित मात्रा में उपलब्ध और नष्ट होने वाली नहीं है।

सरकारों को गोरक्षकों की रक्षा का ध्यान देना चाहिए

गायों की रक्षा करना अति आवश्यक है, पूरा गोवंश बहुत उपयोगी है, बायोगैस एक पहलू मात्र है, जो ऊर्जा आवश्यकताओं को पूर्ण करती है। रू. 1. 06 लाख करोड़ के वार्षिक खर्च को बचाया जा सकता है। इसकी पूरे देश में ट्रांसपोर्टेन, रिफिलिंग, हैंडलिंग पर होने वाला खर्च भी बचाया जा सकता है। गोरक्षकों और गोप्रेमियों के कारण अर्थव्यवस्था का यह अति महत्वपूर्ण पहलू सुरक्षित किया जा सकता है। आए दिन गोरक्षकों पर हमले होते रहते हैं, गोतस्कर और जिहादी ऐसे हमलों में लिप्त पाए जाते हैं। इसके पक्ष में कुछ घटनाओं का विवरण प्रमाणस्वरूप प्रस्तुत है।

फरसा वाले बाबा : मथुरा (उत्तर प्रदेश) में मार्च 2026 में गौ तस्करों द्वारा गौ रक्षक और साधु चंद्रशेखर (फरसा वाले बाबा) की गाड़ी से कुचलकर कथित हत्या कर दी गई। वह बाइक से तस्करों का पीछा कर रहे थे।

उत्तर प्रदेश, बरेली (सितंबर 2015) : सब–इंस्पेक्टर मनोज मिश्रा की गौ तस्करों ने गोली मारकर हत्या कर दी थी, जब वे तस्करी रोकने की कोशिश कर रहे थे।

प्रशांत पुजारी : मंगलुरु, कर्नाटक (अक्टूबर 2015) : बजरंग दल के सक्रिय सदस्य प्रशांत पुजारी की हत्या कर दी गई थी। वह अवैध बूचड़खानों और तस्करी के खिलाफ अभियान चला रहे थे।

गोपाल, पलवल (जुलाई 2019) : हरियाणा के पलवल में "गौ रक्षा दल" के सदस्य गोपाल की गौ तस्करों ने गोली मारकर हत्या कर दी। गोपाल को सूचना मिली थी कि इलाके में तस्कर सक्रिय हैं, जब वह उन्हें रोकने पहुँचे तो उन पर फायरिंग कर दी गई।

राज सिंह (कांस्टेबल), पलवल (अप्रैल 2016) : हरियाणा पुलिस के कांस्टेबल राज सिंह की तस्करों ने बेहद बर्बरता से हत्या की थी। तस्करों ने पहले उन्हें वाहन से टक्कर मारी और फिर जानबूझकर गाड़ी बैक करके उन्हें दोबारा कुचला।

सोनू सिंह उर्फ प्रशांत, तेलंगाना (अक्टूबर 2024 / 2025) : गौ रक्षक सोनू सिंह पर तस्करों द्वारा जानलेवा हमला किया गया था, जिसमें वे गंभीर रूप से घायल हुए, उनकी जान गई।

विवेक यादव, होशंगाबाद (जून 2020) : होशंगाबाद (अब नर्मदापुरम) जिले के बाबई इलाके में 35 वर्षीय गौ रक्षक विवेक यादव की धारदार हथियारों से हमला कर और फिर गोली मारकर हत्या कर दी गई थी। यह घटना कैमरे में भी कैद हुई थी।

संजू प्रधान, सिमडेगा (जनवरी 2022) : सिमडेगा जिले के बेसराजरा गाँव में संजू प्रधान की भीड़ द्वारा पीट–पीटकर और जलाकर हत्या कर दी गई थी।

प्रवीण नेतारू, दक्षिण कन्नड़ (जुलाई 2022) : प्रवीण नेतारू भी गौ रक्षा और हिंदू संगठनों के कार्यों में सक्रिय थे, जिनकी हत्या के बाद इलाके में भारी तनाव फैला था।

गणेश शेलके पर हमला, छत्रपति संभाजी नगर (अक्टूबर 2025) : छत्रपति संभाजी नगर (औरंगाबाद) में गौ तस्करी की सूचना पर गए गौ रक्षक गणेश शेलके पर 10–15 संदिग्ध तस्करों / कसाइयों ने चाकू से हमला किया।

सोनू सरपंच, पंजाब–हरियाणा सीमा (अगस्त 2024) : गौ तस्करों द्वारा की गई गोलीबारी में सोनू सरपंच की मृत्यु हो गई।

हार्दिक कंसारा, वलसाड (जून 2021) : वलसाड में विश्व हिंदू परिषद के गौ रक्षक हार्दिक कंसारा की गौ तस्करों ने टेंपो से कुचलकर हत्या कर दी थी।

हिंदू और हिंदुत्व आधुनिक बोध

पार्थसारथि थपलियाल

सनातन, हिन्दू और हिंदुत्व शब्द नहीं, सभ्यता का आत्मबोध है। आज के भारत में यदि कोई शब्द सबसे अधिक बहस, भ्रम और वैचारिक टकराव का कारण बना है, तो वह है–हिन्दू। इसके साथ ही सनातन और हिंदुत्व जैसे शब्दों को या तो एक–दूसरे का पर्याय मान लिया जाता है, या फिर जान–बूझकर उन्हें परस्पर विरोधी खाँचों में बाँट दिया जाता है। जबकि वस्तुतः ये तीनों शब्द किसी धार्मिक संकीर्णता के नहीं, बल्कि भारत की सभ्यतागत निरंतरता के परिचायक हैं।

भाषाविद भोलानाथ तिवारी की लिखी पुस्तक भाषा विज्ञान में उन्होंने शरीफुद्दीन अली यजदी के लिखे तैमूर के जफरनामा (विजय पत्र) में 1424 ई. में हिन्दी शब्द लिखा पाया। वैदिक संहिताओं में, ब्राह्मण या आरण्यक ग्रंथों में, यहाँ तक कि उपनिषदों में भी "हिंदी" शब्द नहीं है। 16वीं सदी के बृहस्पति (जैन) आगम में हिंदुस्तान शब्द पाया जाता है। 16वीं सदी के शासन काल को देखें तो मुगल काल था। उस काल में पर्शिया (फारस) के लोग व्यापार के लिए भारत आया करते थे। उस भारत में सिंधु नदी भी बहती थी। उनके भाषाई चलन में सिंध को हिंद बोलना प्रचलन में आया। यह नहीं कि उनके यहाँ स ध्वनि नहीं थी। अगर ऐसा होता तो फारसी भाषा में "स" शब्द को भी "ह" बोलते। सप्ताह के लिए हफ्ता शब्द भी फारसी का है। हमारे यहाँ जोधपुर में पारंपरिक जीवन में सरदारपुरा को हरदारपुरा बोलते हैं। शफाखाना (अस्पताल) को हफाखाना कहते हैं। मैंने जोधपुर में अपने सेवा काल में किसी शैतान सिंह के नाम को हैतान हिंग नहीं सुना। भारत के पूर्वोत्तर राज्य असम के लोग असम शब्द का उच्चारण अहोम करते हैं। ऐसा नहीं कि वहाँ "स" व्यंजन न हो।

भारत के महान संत एवं स्वाधीनता आंदोलन के अग्रणीय सेनानी, भूदान आंदोलन के प्रेरक स्व. विनोबा भावे ने अपने एक लेख में हिंदू की परिभाषा देते हुए लिखा था–

यो वर्णाश्रमनिष्ठावान गोभक्तः श्रुतिमातृकः
मूर्तिं च नावजानाति सर्वधर्मसमादरः।
उत्प्रेक्षते पुनर्जन्म तस्मान्मोक्षणमीहते
भूतानुकूल्यं भजते स वै हिंदुरिति स्मृतिः।।
हिंसा दूयते चिततं तेन हिंदुरितीरितः।।

अर्थात् वर्णों और आश्रमों की व्यवस्था में निष्ठा रखनेवाला, गो सेवक, श्रुतियों को माता की भांति पूज्य मानने वाला तथा सब धर्मों का आदर करनेवाला, जो देव मूर्ति की अवज्ञा नहीं करता, पुनर्जन्म को मानता है और उससे मुक्त होने की चेष्टा करता है तथा जो सब जीवों के अनुकूल बर्ताव अपनाता है, वहीं हिंदू माना गया है।

हिंसा से उसका चित्त दुखी होता है, इसलिए उसे हिंदू कहते हैं। भारत के दूसरे राष्ट्रपति डॉ. एस. राधाकृष्णन ने अपनी पुस्तक "हिंदू व्यू आफ लाइफ" में लिखा –"हिंदुत्व जीवन पद्धति है न कि कोई विचारधारा। हिन्दुत्व जहाँ वैचारिक अभिव्यक्ति को स्वतंत्रता देता है, वहीं वह व्यावहारिक नियम को सख्ती से अपनाने को कहता है। नास्तिक अथवा आस्तिक सभी हिन्दू हो सकते हैं, बशर्ते वे हिन्दू

सँस्कृति और जीवन पद्धति को अपनाते हों। हिन्दुत्व धार्मिक एकरूपता पर जोर नहीं देता, वरन् आध्यात्मिक दृष्टिकोण अपनाता है"। स्कंद पुराण में एक श्लोक है–

हिमालयं समारभ्य यावत् इन्दुसरोवरम्।
तं देवनिर्मितं देशं हिन्दुस्थानं प्रचक्षते।।

अर्थात् हिमालय से लेकर सागर तक जो देवताओं द्वारा बनाया गया देश है, उसे भारत कहते हैं। पाश्चात्य विद्वानों ने मत व्यक्त किया है कि स्कंद पुराण आठवीं सदी का है। लोग अक्सर शैव ग्रंथ मेरु में लिखित एक श्लोक का उल्लेख करते हैं–

हिन्दुधर्मप्रलोप्तारो जायन्ते चक्रवर्तिनः।
हीनञ्च दूषयत्येव हिन्दुरिति उक्तः प्रिये।।

यह ग्रंथ भी नौवीं सदी का है जिस दौर में अरब देशों के लोग भारत आया–जाया करते थे। वास्तव में "सनातन धर्म" ही भारत की मूल आत्मा है। सनातन का अर्थ है, जो सदा था, सदा है और सदा रहेगा। यह कोई मत, पंथ या संप्रदाय नहीं बल्कि एक जीवन–दर्शन है, जिसमें सत्य, कर्म, पुनर्जन्म, मोक्ष और करुणा के सूत्र अंतर्गुम्फित हैं। इसमें ईश्वर साकार भी है, निराकार भी, एक भी है और अनेक भी। यही इसकी व्यापकता है और यही इसकी शक्ति।

तो फिर प्रश्न उठता है कि हिन्दू धर्म की अवधारणा कहाँ से आई? इसका उत्तर मध्यकाल और औपनिवेशिक काल में छिपा है। इस्लामी शासन के दौर में भारत के स्थानीय, गैर–इस्लामी समुदायों को सामूहिक रूप से 'हिन्दू' कहा गया। बाद में अँग्रेजों ने प्रशासनिक सुविधा के लिए 'हिंदू धर्म, 'हिंदू कानून' जैसे वर्गीकरण गढ़े। यहीं से "हिन्दू" शब्द एक धर्म–संज्ञा के रूप में प्रचलित हुआ, जबकि इसकी जड़ें सामाजिक और साँस्कृतिक थीं, धार्मिक नहीं।

हिंदुत्व शब्द पर आम बहस – इतिहास को देखें तो पता चलता है कि सिंध पर आक्रमण से पहले भारत में न हिंदू शब्द था न हिंदू धर्म/सँस्कृति। आठवीं शताब्दी के बाद हिंदू शब्द के कुछ संदर्भ मिलते हैं। मुगलकाल में सनातन धर्मी लोगों को हिंदू कहा जाने लगा। औरंगजेब के शासन काल में काफिर शब्द हिंदुओं के लिए उपयोग में लाया गया। हिंदू स्थान बोधक शब्द है। भाव यह है कि हिंदू वह प्रत्येक व्यक्ति है,

जो हिंदुस्तान में रहता है।

व्याकरण जानने वाले लोग जानते हैं कि जब शब्दों में प्रत्यय या उपसर्ग लगाते हैं, तो उस शब्द का भाव बदल जाता है। जैसे–बंधु शब्द का सीधा अर्थ भाई है। बंधु शब्द पर "त्य" प्रत्यय लगाकर नया शब्द बना–बंधुत्व। बंधुत्व शब्द भाव वाचक संज्ञा है। इसका भाव बना भाई–चारा। इसी प्रकार हिंदू शब्द में त्य प्रत्यय लगने से नया शब्द बना हिंदुत्व। (संधि नियम से हिंदू में ऊ की मात्रा के स्थान पर उ की मात्रा लगी) हिंदुत्व किसी व्यक्ति या संप्रदाय का नाम नहीं, बल्कि एक तत्त्व, भाव या जीवन–दृष्टि को सूचित करता है। हिंदू व्यक्ति या समाज का परिचायक है, जबकि हिंदुत्व उस समाज की सँस्कृति, दृष्टि और मूल्य–तत्त्व को दर्शाता है।

चंद्रनाथ बसु (1844–1910) बंगाल में हिंदुत्व के सशक्त पक्षकार हुए हैं। उन्होंने सबसे पहले 1892 में हिंदुत्व शब्द का उपयोग किया था। चन्द्रनाथ ने हिंदुओं को अन्य सभी धर्मों के लोगों से मौलिक रूप से श्रेष्ठ बताया था। स्वातन्त्र्यवीर विनायक दामोदर सावरकर ने 1923 में एक किताब लिखी, जिसका नाम है–Hindutwa : Who is Hindu? सावरकर ने लिखा – "हिन्दुत्व कोई संकीर्ण पूजा– पद्धति नहीं बल्कि एक साँस्कृतिक, राष्ट्रीय और ऐतिहासिक पहचान है।" सावरकर के अनुसार "हिन्दू" होने की तीन अनिवार्य शर्तें हैं–(1) पितृभूमि – भारत उस व्यक्ति की पैतृक भूमि हो। (2) पुण्यभूमि–भारत उसकी पवित्र भूमि भी हो (3) सांझा सँस्कृति – उसकी इतिहास–बोध, परंपराएँ, वीरगाथाएँ और साँस्कृतिक स्मृति भारत से जुड़ी हों।

भारत के दूसरे राष्ट्रपति डॉ. एस. राधाकृष्णन ने अपनी पुस्तक "हिंदू व्यू आफ लाइफ" में लिखा – "हिंदुत्व जीवन पद्धति है, न कि कोई विचारधारा। हिन्दुत्व जहाँ वैचारिक अभिव्यक्ति को स्वतंत्रता देता है, वहीं वह व्यावहारिक नियम को कठोरता से अपनाने को कहता है। नास्तिक अथवा आस्तिक सभी हिन्दू हो सकते हैं, बशर्ते वे हिन्दू सँस्कृति और जीवन पद्धति को अपनाते हों। हिन्दुत्व धार्मिक एकरूपता पर जोर नहीं देता, वरन् आध्यात्मिक दृष्टिकोण अपनाता है"।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के अनुसार –हिंदू कोई संकीर्ण धार्मिक संप्रदाय नहीं, बल्कि भारत की राष्ट्रीय और साँस्कृतिक पहचान है। संघ के दूसरे सरसंघचालक माधव राव सदाशिव राव गोलवलकर (गुरुजी) ने लिखा–"हिंदू वह है, जो इस भूमि को अपनी मातृभूमि मानता है और जिसकी जीवन–दृष्टि इस भूमि की सँस्कृति से निर्मित है।"

सनातन धर्म जो शाश्वत है, काल बाधित नहीं है। यह कल भी था, आज भी है और कल भी रहेगा। उसी के लिए एक कालखंड में हिंदू शब्द प्रचलन में आया, आम लोग भी सनातन की बजाय हिंदू धर्म कहने लगे। यह वैसे ही है, जैसे बंगाल में गंगा की एक धारा का नाम भागीरथी या हुगली है। धर्म तत्व में कोई

परिवर्तन नहीं है। धर्म सनातन ही है। हिंदू धर्म को लेकर डॉ. यशवंत प्रभु बनाम पी. के. कुंठे आदि द्वारा सुप्रीम कोर्ट में प्रस्तुत वाद – क्या चुनाव प्रचार में "हिंदुत्व" या "हिंदू धर्म" शब्द का प्रयोग स्वतः धार्मिक आधार पर वोट माँगना भ्रष्ट तरीका माना जाएगा ?

इस प्रकरण पर निर्णय देते हुए जस्टिस जे. एस. वर्मा की अध्यक्षता वाली तीन सदस्यीय संविधान पीठ ने 11 दिसंबर 1995 को अपने फैसले में कहा – हिंदुत्व को केवल पूजा–पद्धति या मजहबी नियमों तक सीमित नहीं किया जा सकता। "Ordinarily, Hindutva is understood as a way of life or a state of mind-" अर्थात–हिंदुत्व भारतीय समाज की जीवन–दृष्टि, सँस्कृति और आचार–विचार का व्यापक तत्त्व है। कोर्ट ने यह अत्यंत महत्वपूर्ण सिद्धांत स्थापित किया – केवल 'हिंदुत्व' शब्द का प्रयोग अपने–आप में अवैध नहीं है। हिंदू धर्म की परिभाषा एक वक्तव्य में नहीं दी जा सकती।

हिंदुत्व का अर्थ न तो धार्मिक कट्टरता है और न ही किसी दूसरे पंथ के प्रति बैर। यह हिन्दू होने का भाव है, एक सभ्यतागत चेतना। वीर सावरकर ने इसे परिभाषित करते हुए स्पष्ट किया था कि "हिंदुत्व एक साँस्कृतिक पहचान है, जो

भारत को अपनी पितृभूमि और पुण्यभूमि मानती है।" हिंदुत्व का मूल स्वभाव बहिष्कारी नहीं, बल्कि समावेशी है। "वसुधैव कुटुम्बकम्" जैसी अवधारणा किसी मजहबी कट्टरता से नहीं बल्कि इसी सभ्यता से उपजी है। समस्या तब उत्पन्न होती है, जब हिंदुत्व को राजनीतिक चश्मे से देखा जाता है, या, उसे जानबूझकर धार्मिक उग्रता के रूप में प्रस्तुत किया जाता है।

आज आवश्यकता इस बात की है कि सनातन, हिन्दू और हिंदुत्व के बीच कृत्रिम विरोध समाप्त हो। सनातन धर्म उस शाश्वत सत्य का नाम है, जो भारत की आत्मा में बसता है। हिन्दू उस आत्मा से जुड़ा सामाजिक–साँस्कृतिक परिचय है और हिंदुत्व उस सभ्यता का आत्मगौरव है, जो आक्रमणों, उपनिवेशवाद और वैचारिक दासता के बावजूद जीवित रही।

भारत को समझने के लिए इन शब्दों को अलग–अलग तराजू पर नहीं तौला जा सकता। इन्हें जोड़कर देखने पर ही स्पष्ट होता है कि यह कोई "धर्म बनाम धर्म" की लड़ाई नहीं बल्कि सभ्यता बनाम विस्मृति का प्रश्न है। यदि भारत को स्वयं को जानना है, तो, उसे इन शब्दों से भय नहीं बल्कि विवेकपूर्ण संवाद करना होगा।

murari.shukla@gmail.com

सुधांशु जी पटनायक ने सिलाई प्रशिक्षण केंद्र का किया अवलोकन

जयपुर। विश्व हिंदू परिषद धर्मप्रसार द्वारा जयपुर महानगर के विभिन्न स्थानों पर महिला सशक्तिकरण एवं आत्मनिर्भरता के उद्देश्य से संचालित निःशुल्क सिलाई प्रशिक्षण केंद्रों में से कागदीवाड़ा बस्ती में संचालित केंद्र का अवलोकन करते हुए विश्व हिंदू परिषद के केंद्रीय मंत्री एवं धर्मप्रसार के अखिल भारतीय प्रमुख सुधांशु मोहन पटनायक ने अपने संबोधन में बताया कि महिलाओं को निःशुल्क प्रशिक्षण देकर आगे बढ़ाने से सशक्त समाज का जहाँ निर्माण होगा, वहीं नारी शक्ति को भी बल मिलेगा।

उन्होंने इस केंद्र पर साप्ताहिक सत्संग प्रारंभ कर संपूर्ण मोहल्ले के लिए मातृशक्ति जनजागृति का कार्य करने का आह्वान भी किया।

धर्मप्रसार प्रांत प्रमुख सी. एम. भार्गव ने बताया कि मुंबई प्रवासी नंदलाल जी, मनमोहन जी एवं सोहन जी गोयनका ने अपनी स्व. माताजी शांति देवी की स्मृति में जयपुर महानगर में दो सिलाई प्रशिक्षण केंद्र संचालित किए हैं। सिलाई प्रशिक्षक पूजा महावर के निर्देशन में प्रशिक्षु बहनें यहाँ सिलाई, कढ़ाई व डिजाइनिंग में निपुणता प्राप्त कर स्वावलंबी बन रही हैं। इस अवसर पर बहनों द्वारा तैयार पोशाकों का प्रदर्शन भी किया गया। इस संपूर्ण कार्य में गालव जिला विहिप मंत्री लालचंद एवं सहमंत्री संदीप शर्मा सहयोग कर रहे हैं।

cmbhargava1957@gmail.com

जगराम गुर्जर

पारंपरिक मेलों पर संकट

सुरक्षा और आजीविका के बीच संतुलन की तलाश

भारत के पारंपरिक मेले केवल मनोरंजन का साधन नहीं हैं, वे हमारे सामाजिक, साँस्कृतिक और आर्थिक जीवन का जीवंत हिस्सा हैं। गाँव–गाँव, शहर–शहर लगने वाले ये मेले सदियों से लोगों के मेल–मिलाप, लोक संस्कृति और आजीविका का आधार रहे हैं। यहाँ झूले लगाने वाले, खिलौने बेचने वाले, बर्तन, चूड़ी, हस्तशिल्प बेचने वाले दुकानदार, बुनकर, लोक कलाकार और छोटे कुटीर उद्योगों से जुड़े हजारों परिवार अपनी रोजी–रोटी कमाते हैं, लेकिन आज यह पारंपरिक कारोबार गंभीर संकट के दौर से गुजर रहा है। विशेष रूप से गुजरात में तो स्थिति ऐसी बन गई है कि मेले लगभग समाप्ति की ओर हैं। अन्य राज्यों में भी कड़े नियमों की आशंका से मेला आयोजकों और झूला संचालकों के बीच असुरक्षा का माहौल है।

राजकोट में एक गेमिंग जोन में हुई दुर्भाग्यपूर्ण घटना ने पूरे देश को झकझोर दिया था। उस दुर्घटना के बाद राज्य सरकार ने सुरक्षा को प्राथमिकता देते हुए कठोर नियम लागू किए। जन सुरक्षा सर्वोपरि है, इसमें कोई मतभेद नहीं हो सकता। सरकार का दायित्व है कि वह नागरिकों की सुरक्षा सुनिश्चित करे। लेकिन नियम बनाते समय इस बात पर शायद ध्यान ही नहीं दिया गया कि राजकोट की घटना एक बंद, पक्के और अवैध गेमिंग जोन में हुई थी, जबकि पारंपरिक मेले और झूले खुले वातावरण में अस्थायी ढांचे में लगाए जाते हैं।

खुले मेलों के झूले न तो पक्के भवनों में होते हैं, न ही उनमें जटिल बिजली व्यवस्था या आग पकड़ने वाली बनावट होती हैं। इसके बावजूद नए नियमों का सबसे अधिक प्रभाव इन्हीं छोटे मेला आयोजकों और झूला संचालकों पर पड़ा है। नए प्रावधानों के तहत महंगे इंजीनियरिंग सर्टिफिकेट, भारी बीमा कवर, जटिल लाइसेंस प्रक्रिया और बार–बार निरीक्षण जैसी शर्तें लागू कर दी गई हैं। छोटे स्तर पर काम करने वाले ये लोग पहले ही भारी कर्ज लेकर अपने झूले खरीदते हैं। उनके लिए महंगे प्रमाण पत्र और बीमा प्रीमियम जुटाना लगभग असंभव है। परिणामस्वरूप गुजरात में मेले लगने बंद हो गए हैं, झूले खुले मैदानों में जंग खा रहे हैं और हजारों परिवारों के सामने रोजी–रोटी का संकट खड़ा हो गया है। मेले और झूले वालों में से अधिकांश के पास इस पारंपरिक काम के अलावा कोई वैकल्पिक रोजगार नहीं है। पीढ़ियों से यही इनका पेशा रहा है। यह केवल व्यवसाय नहीं, इनकी पहचान भी है। यदि यह बंद होता है, तो केवल रोजगार ही नहीं, एक जीवंत लोक परंपरा भी समाप्त हो जाएगी।

ध्यान देने वाली बात है कि कोई भी मेला आयोजक या झूला संचालक सुरक्षा नियमों को हटाने की मांग नहीं कर रहा। बंद गेमिंग जोनों के लिए कठोर नियम आवश्यक हैं और उनका पालन होना चाहिए, लेकिन खुले मेलों के पारंपरिक झूलों के लिए अलग, सरल और व्यवहारिक नियम बनाए जाने चाहिए। सरकार यदि श्रेणीकरण (कैटेगराइजेशन) की व्यवस्था करे, तो भी झूले वालों को राहत मिल सकती है।

जैसे बड़े यांत्रिक राइड्स और छोटे पारंपरिक झूलों के लिए अलग–अलग मानक बनाए जाएँ, तो इससे संतुलन बन सकता है। इसके साथ ही समूह बीमा योजना, कम लागत निरीक्षण प्रणाली और लाइसेंस प्रक्रिया को सरल बनाने जैसे कदम उठाए जाएँ, तो मेला व्यवसायी सुरक्षा मानकों का पालन भी कर सकेंगे और अपनी आजीविका भी बचा पाएंगे। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि नए नियमों को लागू करते समय ग्रेस पीरियड दिया जाए। यदि दो से तीन वर्षों का समय दिया जाए, तो छोटे संचालक धीरे–धीरे आवश्यक प्रावधानों को पूरा कर सकते हैं। अचानक लागू की गई कठोर शर्तों ने पूरे तंत्र को ठप्प कर दिया है।

हाल में सूरजकुंड में झूला टूटने की दुर्भाग्यपूर्ण घटना भी सामने आई। ऐसी घटनाएँ निश्चित रूप से चिंताजनक हैं, लेकिन हर हादसे का पूरा दोष झूला संचालक पर डाल देना न्यायसंगत नहीं है। यह भी जांच का विषय है कि कहीं झूलों के निर्माण में तकनीकी खामी या मैन्युफैक्चरिंग डिफेक्ट तो नहीं था। आज देश में अनेक झूला निर्माता कार्यरत हैं। क्या उनके निर्माण मानकों की नियमित जांच होती है ? क्या यह सुनिश्चित किया जाता है कि हर झूला तकनीकी कसौटियों पर खरा उतरता है ? यदि निर्माण स्तर पर

ही त्रुटि रह जाए, तो उसका खामियाजा अंतिम संचालक और आम जनता को भुगतना पड़ता है। इसलिए समस्या का समाधान केवल संचालन स्तर पर कठोरता बढ़ाने में नहीं है, बल्कि निर्माण से लेकर संचालन तक एक संतुलित और व्यवहारिक निगरानी व्यवस्था बनाने में है।

पारंपरिक मेलों को समाप्त होने देना केवल आर्थिक क्षति नहीं होगी, बल्कि यह हमारी साँस्कृतिक विरासत के लिए भी आघात होगा। आज जब बड़े मॉल और डिजिटल मनोरंजन के साधन तेजी से बढ़ रहे हैं, तब भी मेले लोगों को खुला, सामुदायिक और पारिवारिक मनोरंजन प्रदान करते हैं। ग्रामीण अर्थव्यवस्था को संबल देने में इनकी भूमिका को नकारा नहीं जा सकता। आवश्यक है कि सरकार, प्रशासन और मेला आयोजकों के प्रतिनिधि मिलकर एक व्यवहारिक नीति तैयार करें। एक ऐसी नीति जो भले ही सुरक्षा से समझौता न करे, लेकिन छोटे व्यवसायियों को काम करने से भी नहीं रोके। यदि समय रहते संतुलित निर्णय नहीं लिया गया, तो आने वाली पीढियाँ शायद केवल किताबों में पढ़ेंगी कि कभी हमारे गाँव–शहरों में रंग–बिरंगे मेले लगते थे, जिनमें बच्चों की हंसी और लोकगीतों की गूंज होती थी। सुरक्षा और आजीविका के बीच संतुलन ही इस संकट का वास्तविक समाधान है, यही समय की मांग है।

bitturajasthani@gmail.com

बजरंग दल का अ.भा. शिक्षक प्रशिक्षण वर्ग भाग्यनगर में आयोजित

भाग्यनगर। विश्व हिंदू परिषद, बजरंग दल का अखिल भारतीय शिक्षक प्रशिक्षण वर्ग दिनांक 9 मार्च से श्री साईं धामम कीसर, भाग्यनगर तेलंगाना प्रान्त में प्रारंभ हुआ। सर्वप्रथम 4.15 बजे प्रातः जागरण, 5.15 बजे प्रातः स्मरण से प्रारंभ होकर अनेक विषयों का शारीरिक प्रशिक्षण का अभ्यास हुआ। सुबह 11.00 बजे से वर्ग का उद्घाटन सत्र प्रारंभ हुआ। उद्घाटन सत्र में विश्व हिंदू परिषद के केंद्रीय संगठन महामंत्री माननीय मिलिंद परांडे जी का मार्गदर्शन मिला। देश भर के 42 प्रान्तों से 334 शिक्षार्थी व विभिन्न विषयों के 40 शिक्षक वर्ग में सम्मलित हुए।

इस वर्ग के उद्घाटन सत्र में पूज्य संत श्री रामानन्द प्रभु जी श्री साईं धामम आश्रम, विश्व हिंदू परिषद के संयुक्त महामंत्री माननीय स्थाणु मालयन जी, केंद्रीय सह मंत्री केशव राजू जी, बजरंग दल के राष्ट्रीय संयोजक किशन प्रजापत, बजरंग दल के राष्ट्रीय सह संयोजक श्री विवेक कुलकर्णी जी, तेलंगाना प्रांत के प्रांत अध्यक्ष श्री नृसिंहामूर्ति जी, प्रांत मंत्री लक्ष्मीनारायण जी, प्रांत सह मंत्री रमेश जी, श्री भानु जी, बजरंग दल बेंगलोर और भाग्यनगर क्षेत्र के संयोजक श्री वीर कुमार स्वामी, लखनऊ क्षेत्र संयोजक श्री पूर्णेंद्र जी शाही, मेरठ क्षेत्र संयोजक श्री अनुज जी वालिया, भोपाल क्षेत्र संयोजक श्री विश्ववर्धन जी भट्ट आदि उपस्थित रहे।

प्रहलाद सबनानी

पंच परिवर्तन कार्यक्रम से समाज परिवर्तन सम्भव है

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने अपनी स्थापना के 100 वर्ष पूर्ण कर लिए हैं और यदि हम संघ की 100 वर्षों की यात्रा पर दृष्टि डालें, तो ध्यान में आता है कि संघ के स्वयंसेवकों ने जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में विचार और क्रियाशीलता के स्तर पर सक्रिय योगदान दिया है। वे अनेक क्षेत्रों में परिवर्तन के वाहक भी बने हैं। प्रारम्भ का सीमित संघ कार्य, समय के साथ व्यापक होता गया है। समाज की विभिन्न आवश्यकताओं को समझते हुए स्वयंसेवक विविध आयामों में अपने सहयोगियों के साथ क्रियाशील बने हैं। परिणामतः संघ के उद्देश्य के अनुरूप देश में हिंदुत्व का जागरण करने की दिशा में विशेष प्रगति हुई है। हिंदुत्व के जागरण से समाज में जाति, वर्ग, भाषा इत्यादि के आधार पर होने वाले अनेक प्रकार के भेदभाव, धीरे–धीरे कम होने लगे हैं। श्रीराम जन्मभूमि मुक्ति आंदोलन, अयोध्या मंदिर में श्रीरामलला की प्राण प्रतिष्ठा, कुम्भ जैसे विराट आयोजन इत्यादि अनेक ऐसे अवसर आए हैं, जहाँ हिंदू समाज का एक संगठित, भव्य और उच्च आदर्शों से युक्त स्वरूप सामने आया है। यह दृश्य समाज में आत्मविश्वास जगाने वाला बन रहा है। हम सब मिलकर देश के भविष्य को उज्जवल एवं सुदृढ़ बना सकते हैं और आने वाली पीढ़ियों के लिए एक सकारात्मक वातावरण निर्मित कर सकते हैं। इसलिए ये हमारी राष्ट्रीय एकात्मता को सुदृढ़ करने वाले आयोजन सिद्ध हुए हैं। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के 100 वर्ष केवल इतिहास की उपलब्धियाँ नहीं हैं, बल्कि भविष्य की दिशा का संकल्प हैं।

आज जब हम राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की 100 वर्षों की इस यात्रा को देखते हैं, तो, यह भी स्पष्ट होता है कि समाज में जिस परिवर्तन के लिए संघ के स्वयंसेवक सक्रिय रहे हैं, वह अब दिखाई देने लगा है। हिंदुत्व और इसकी परम्पराओं पर लोगों का विश्वास बढ़ा है। समाज के अनेक लोग इस तथ्य को स्वीकार कर रहे हैं और इसका अनुभव भी कर रहे हैं। हिंदुत्व की इस जागृति के कारण लोग अब हिंदू होने में गर्व का अनुभव कर रहे हैं। एक समय था जब सार्वजनिक जीवन में हिंदू समाज की कमियों को ही उजागर किया जाता था, जिससे अनेक लोग हिंदुत्व की अच्छाईयों को पहचान नहीं पाए; किंतु अब स्थिति बदल रही है। लोग अपने पूर्वजों के धर्म और परम्पराओं को महत्व देने लगे हैं। वे अपने बच्चों के नामकरण से लेकर विवाह पद्धति तक में हिंदू संस्कारों का समावेश कर रहे हैं। घर की परम्पराओं को आदरपूर्वक अपनाया जा रहा है।

उक्त वर्णित सम्पूर्ण प्रक्रिया का उद्देश्य है एक सच्चरित्र, प्रामाणिक और संस्कारवान पीढ़ी का निर्माण करना। ऐसी पीढ़ी समाज का वातावरण सुधार कर घर और समाज में सुख शांति स्थापित कर सकती है। इसलिए इन मूल्यों और संस्कारों को महत्व देने और उन्हें अपने जीवन में उतारने के प्रयास आज घर–घर में होने लगा है। लोग अब ऐसे सभी मंचों और माध्यमों से जुड़ने के लिए प्रयत्नशील हैं, जो इस दिशा में मार्गदर्शन प्रदान करते हैं। संघ को भी लोग इस दृष्टि से एक महत्वपूर्ण माध्यम मानने लगे हैं और विश्वासपूर्वक संघ से जुड़ने का उत्साह दिखा रहे हैं। जैसे–जैसे हिंदुत्व पर विश्वास बढ़ रहा है, वैसे–वैसे भारत के प्रति श्रद्धा और विश्वास, व्यापक और गहरा हो रहा है। संघ का मानना है कि "वसुधैव कुटुंबकम्" के आदर्श पर चलकर भारत न केवल अपने समाज को सशक्त करेगा, बल्कि पूरी दुनियाँ को शांति, सद्भाव और सहयोग का संदेश देकर विश्वगुरु की भूमिका निभाएगा। यह सब भारतीय समाज में परिवर्तन लाकर ही फलिभूत हो सकता है। संघ द्वारा अपनी स्थापना के समय लिए गए संकल्पों को शीघ्र ही पूर्ण करने के उद्देश्य से अपने इस शताब्दी वर्ष में कुछ विशेष कार्यक्रमों के माध्यम से भारतीय समाज को (1) अपने नागरिक कर्त्तव्यों के प्रति सजग करने, (2) पर्यावरण के प्रति सचेत करने, (3)

नागरिकों में स्व के भाव को जगाने एवं स्वदेशी उत्पादों के उपयोग को बढ़ावा देने, (4) कुटुम्ब प्रबोधन के माध्यम से पारिवारिक भावना जागृत करने एवं (5) समाज में समरसता के भाव को सुदृढ्ढ करने के लिए गम्भीर प्रयास किए जा रहे हैं। इस कार्यक्रम को "पंच परिवर्तन" का नाम दिया गया है और इसका आह्वान परम पूजनीय सरसंघचालक श्री मोहन जी भागवत द्वारा किया गया है ताकि अनुशासन एवं देशभक्ति से ओतप्रोत युवा वर्ग अनुशासित होकर अपने देश को आगे बढ़ाने की दिशा में कार्य करे। इस पंच परिवर्तन कार्यक्रम को सुचारू रूप से लागू कर समाज में बड़ा परिवर्तन लाया जा सकता है।

व्यवहार में पंच परिवर्तन को समाज में किस प्रकार लागू करना है इस हेतु हम समस्त भारतीय नागरिकों को मिलकर प्रयास करने होंगे, क्योंकि पंच परिवर्तन केवल चिंतन, मनन अथवा बहस का विषय नहीं है, बल्कि इसे हमें अपने व्यवहार में उतारने की आवश्यकता है। उक्त पांचों आचरणात्मक बातों का समाज में होना सभी चाहते हैं, अतः छोटी–छोटी बातों से प्रारंभ कर उनके अभ्यास के द्वारा इस आचरण को अपने स्वभाव में लाने का सतत प्रयास अवश्य करना होगा। जैसे समाज के आचरण में, उच्चारण में संपूर्ण समाज और देश के प्रति अपनत्व की भावना प्रकट हो, प्रत्येक घर में सप्ताह में कम से कम एक बार पूजा या धार्मिक आयोजन हो एवं अपने परिवार के बच्चों के साथ बैठकर महापुरुषों के संबंध में सप्ताह में कम से कम एक घंटे चर्चा हो, परिवार के सभी सदस्यों में नित्य मंगल संवाद, सँस्कारित व्यवहार व संवेदनशीलता बनी रहे, बढ़ती रहे व उनके द्वारा समाज की सेवा होती रहे आदि बातों का ध्यान रखकर कुटुंब प्रबोधन जैसे विषय को आगे बढ़ाया जा सकता है।

मंदिर, पानी, श्मशान के संबंध में कहीं भेदभाव बाकी है, तो वह शीघ्र ही समाप्त होना चाहिए। हम लोग अपने परिवार सहित त्योहारों के समय अनुसूचित जाति के बंधुओं के घर जाएँ और उनके साथ चाय पान करें। साथ ही हम अनुसूचित जाति के बंधुओं को सपरिवार अपने परिवार में बुलाकर सम्मान प्रदान करें। कुल मिलाकर समस्त समाज एक दूसरे के त्योहारों में शामिल हों, ताकि आपस में भाईचारा बढ़े एवं देश में सामाजिक समरसता स्थापित हो सके। सृष्टि के साथ संबंधों का आचरण अपने घर से पानी बचाकर, प्लास्टिक हटाकर व घर आंगन में तथा आसपास हरियाली बढ़ाकर हो सकता है। अपने घरों में जल का कोई अपव्यय नहीं हो रहा है एवं अपने परिवार में हरियाली की चिंता की जा रही है। अपने घर में, रिश्तेदारी में, मित्रों के यहाँ सिंगल यूज प्लास्टिक का उपयोग न करने का आग्रह किया जा रहा है, आदि बातों पर ध्यान देकर देश में पर्यावरण को सुधारा जा सकता है।

स्वदेशी के आचरण से स्व–निर्भरता व स्वावलंबन बढ़ता है। फिजूलखर्ची बंद होनी चाहिए, देश का रोजगार बढ़े व देश का पैसा देश में ही काम आए, इस बात का ध्यान देश के समस्त नागरिकों को रखना चाहिए। इसीलिए कहा जा रहा है कि स्वदेशी का आचरण भी घर से ही प्रारंभ होना चाहिए। समस्त नागरिकों के घर में स्वदेशी उत्पाद ही उपयोग होने चाहिए।

देश में कानून व्यवस्था व नागरिकता के नियमों का भरपूर पालन होना चाहिए तथा समाज में परस्पर सद्भाव और सहयोग की प्रवृत्ति सर्वत्र व्याप्त होनी चाहिए। इन्हें हमारे नागरिक कर्त्तव्यों के रूप में देखा जाना चाहिए। समाज में व्याप्त कुरीतियों के उन्मूलन हेतु हम सबको मिलकर प्रयास करने होंगे। विशेष रूप से युवाओं में नशा की आदत समाप्त करने के लिए तथा विभिन्न समाजों में व्याप्त दहेज की कुप्रथा समाप्त करने के गम्भीर प्रयास हम समस्त नागरिकों को मिलकर ही करने होंगे।

समाज की एकता, सजगता व सभी दिशा में निःस्वार्थ उद्यम, जनहितकारी शासन व जनोन्मुख प्रशासन स्व के अधिष्ठान पर खड़े होकर परस्पर सहयोगपूर्वक प्रयासरत रहते हैं, तभी राष्ट्र बल–वैभव सम्पन्न बनता है। बल और वैभव से सम्पन्न राष्ट्र के पास जब हमारी सनातन संस्कृति जैसी सबको अपना कुटुंब माननेवाली, तमस से प्रकाश की ओर ले जानेवाली, असत् से सत् की ओर बढ़ानेवाली तथा मृत्यु जीवन से सार्थकता के अमृत जीवन की ओर ले जानेवाली सँस्कृति होती है, तब वह राष्ट्र, विश्व का खोया हुआ संतुलन वापस लाते हुए विश्व को सुख शांतिमय नवजीवन का वरदान प्रदान करता है।

संघ की दृष्टि बहुत स्पष्ट है कि सम्पूर्ण भारत की पहचान जिससे है, उस आध्यात्म आधारित एकात्म और सर्वांगीण जीवन दृष्टि को दुनियाँ हिंदुत्व अथवा हिंदू जीवन दृष्टि के नाते जानती है, उस हिंदुत्व को जगाकर सम्पूर्ण समाज को एक सूत्र में जोड़कर निर्दोष और गुणवान हिंदू समाज के संगठन का यह कार्य, जो वर्ष 1925 में प्रारम्भ हुआ, वह आज भी निरन्तर जारी है और आगे भी जारी रहेगा।

prahlad.sabnani@gmail.com

अब आतंकवाद पर होगा निर्णायक 'प्रहार'

मृत्युंजय दीक्षित

विभाजन की विभीषिका के साथ स्वतंत्र हुआ भारत, स्वतंत्रता के बाद से ही आतंकवाद से पीड़ित रहा, किन्तु अभी तक उसके पास आतंकवाद से लड़ने की कोई स्पष्ट नीति या रणनीति ही नहीं थी। वर्ष 2014 में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की सरकार बनने के बाद आतंकवाद के खिलाफ शून्य सहनशीलता (जीरो टॉलरेंस) की नीति स्पष्ट हुई। पहली बार माओवाद जैसे आतंकवाद को समाप्त करने के लिए एक तारीख तय की गई और उस दिशा में काम हुआ, जिसका प्रभाव दिखाई देने लगा है। आतंकवादी हमले होने पर सीमा पार जाकर आतंकवादियों का दमन किया जाता है। अब भारत शत्रु के घर में घुसकर बदला लेता है, ऑपरेशन सिंदूर में भारत का क्रोध सम्पूर्ण विश्व ने देखा है।

आतंकवाद के बढ़ते खतरों व देश विरोधी षड्यंत्रों को ध्यान में रखते हुए केंद्र सरकार ने देश में पहली आतंकवाद रोधी नीति "प्रहार" जारी की है। प्रहार आतंकवाद के खिलाफ एक बहुस्तरीय रणनीति है, जो खुफिया जानकारी के आधार पर चरमपंथी हिंसा की रोकथाम और उसे निष्क्रिय करने पर केंद्रित है। इसका उद्देश्य आतंकवादियों, उनके वित्तपोषकों और समर्थकों को धन, हथियार और सुरक्षित ठिकानों तक पहुँच से वंचित करना है। इसमें साइबर क्राइम, ड्रोन हमलों, सीमा पार आतंकवाद और जटिल सुरक्षा खतरों से निपटने के सुगठित राष्ट्रीय ढांचे का भी उल्लेख किया गया है।

आजकल बहुत से आतंकवादी संगठन युवाओं की भर्ती के लिए इंटरनेट मीडिया का सहारा ले रहे हैं, इंटरनेट के माध्यम से ही साइबर ठगी आदि करने के लिए धन संग्रह कर रहे हैं व लोगों की मानसिकता को अपने पक्ष में करने के लिए छद्म तरीके से सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स पर काम कर रहे हैं, प्रहार रणनीति आतंकवाद के इन नए तरीकों से निपटने का मार्ग दिखाती है।

केंद्रीय गृह मंत्रालय द्वारा जारी की गई प्रहार रणनीति, भारत के अन्दर या विदेश से उत्पन्न होने वाले आतंकी खतरों का सामना करने के लिए सात प्रमुख स्तंभों पर आधारित है। इसमें पाकिस्तान का नाम लिए बिना कहा गया है कि भारत के पड़ोस में अस्थिरता का इतिहास रहा है, जिसके कारण अराजक क्षेत्र उत्पन्न हुए हैं। इसके अलावा इस क्षेत्र के कुछ देशों ने कभी–कभी आतंकवाद को राजनीति के एक साधन के रूप मे इस्तेमाल किया है। इसके बावजूद भारत आतंकवाद को किसी विशेष धर्म, जातीयता, राष्ट्रीयता या सभ्यता से नहीं जोड़ता। भारत ने हमेशा आतंकवाद और किसी भी तत्व द्वारा किसी भी घोषित या अघोषित उद्देश्य की प्राप्ति के लिए इसके उपयोग की स्पष्ट व निर्विवाद रूप से निंदा की है।

नीति दस्तावेज में कहा गया है कि भारत लगातार आतंकवाद के पीड़ितों के साथ खड़ा रहा है और इस पर अडिग है कि दुनियाँ में हिंसा का कोई औचित्य नहीं हो सकता। यही सैद्धांतिक दृष्टिकोण आतंकवाद के विरुद्ध नई दिल्ली की शून्य सहिष्णुता की नीति का आधार है। दस्तावेज में कहा गया है कि भारत लंबे समय से सीमा पार से प्रायोजित आतंकवाद से प्रभावित रहा है, जिसमें जिहादी आतंकवादी संगठन और

उनके सहयोगी संगठन भारत में आतंकी हमलों की योजना बनाने, समन्वय करने, सुविधा प्रदान करने एवं उन्हें अंजाम देने में संलिप्त हैं। भारत अलकायदा और इस्लामिक स्टेट ऑफ इराक एंड सीरिया जैसे वैश्विक आंतकी समूहों के निशाने पर रहा है। जो स्लीपर सेल्स के माध्यम से देश में हिंसा भड़काने का प्रयास कर रहे हैं।

नई प्रहार नीति में बताया गया है कि विदेशी धरती से संचालित आतंकवादियों ने भारत में हिंसा को बढ़ावा देने के लिए साजिशें रची हैं और उनके लिए काम करने वाले पंजाब व जम्मू कश्मीर में आतंकी गतिविधियों और हमलों को अंजाम देने के लिए ड्रोन सहित नवीनतम तकनीकों का इस्तेमाल कर रहे हैं। साजो सामान प्राप्त करने के लिए संगठित आपराधिक नेटवर्क से संपर्क स्थापित कर रहे हैं। अब आतंकी इंटरनेट के नए तरीकों का भरपूर उपयोग करने लगे हैं।

प्रहार (PRAHAAR) की परिभाषा अँग्रेजी के सात शब्दों में संयोजित है, जिसमें पहला है पी से प्रिवेंशन यानी नागरिकों के हितों की रक्षा के लिए आतंकी हमलों की रोकथाम। दूसरा है आर से रिस्पॉन्स अर्थात त्वरित, आनुपातिक और सुनियोजित सैन्य व नागरिक प्रतिक्रिया सुनिश्चित करना। तीसरा है ए से एग्रीगेटिंग इंटरनल कैपासिटीज अर्थात आतंरिक क्षमताओं को एकीकृत करना, जिसमें केंद्र और राज्य की एजेंसियों के बीच समन्वय बढ़ाना और सुरक्षा बलों का आधुनिक तकनीक (AI, ड्रोन) से लैस करना शामिल है। चौथा है एच से ह्यूमन राइट्स एंड रूल ऑफ ला–खतरों को कम करने के लिए मानवाधिकार और कानून व्यवस्था पर आधारित प्रतिक्रिया। पांचवा ए से अटेन्यूएटिंग रेडिकलाजेशन यानी कट्टरता सहित आतंकवाद में सहायता करने वाली परिस्थितियों को कम करना। छठा भी ए से है–एलाइनिंग इंटरनेशनल एफर्ट्स, जिसमें आतंकवाद से मुकाबले के लिए अंतरराष्ट्रीय प्रयासों में समन्वय करना शामिल है तथा अंतिम और सातवां है आर से रिकवरी एंड रेसिलिएंस यानी समग्र समाज को मानसिक और भौतिक रूप से सशक्त बनाना।

प्रहार नीति का एक महत्वपूर्ण उद्देश्य यह भी है कि जैसे ही आतंकी समूहों की साजिश का पता चले उसे उसी समय समाप्त कर देना भी है। गृह मंत्रालय की यह नीति उसी समय आई है, जब हाल ही में तमिलनाडु से 6 संदिग्धों को पकड़ा गया है और उनसे काफी सनसनीखेज जानकारियाँ सामने आ रही हैं। भारत सरकार की आतंकवाद के खिलाफ जीरो टॉलरेंस की नीति को प्रधानमंत्री मोदी हर वैश्विक मंच पर दोहराते रहे हैं; किंतु अब सरकार ने प्रहार नीति जारी करके अपना संकल्प स्पष्ट कर दिया है कि भारत के खिलाफ साजिश रचने वाले चाहे जहाँ पर भी बसे हों, बच नहीं सकेंगे।

ymritvsk1973@gmail.com

हरिद्वार में विश्व के हिंदू शिक्षाविदों का राष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित

देशभर के कुछ प्रमुख हिन्दू विचारकों, लेखकों और शिक्षाविदों को लगा कि विश्व में हिन्दू विचार को फैलाने और वैचारिक चुनौतियों का सामना करने के लिए मिलकर एक मंच बनाना चाहिए। इसमें से जन्म लिया World Assembly of Hindu Academicians (WAHA) ने। शीघ्र ही देश के सब राज्यों और अधिकांश महानगरों में WAHA का गठन हो गया। गहन वैचारिक विमर्श के लिए गोष्ठियों के आयोजन होने लगे। इस विमर्श में से विषयों की सम्यक विवेचना के दस्तावेज बनने लगे।

7 – 8 मार्च 2026 को हरिद्वार में WAHA का राष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित हुआ। इसका विषय था 'हिन्दू बोध से विकसित भारत'।

उद्घाटन सत्र में संघ की कार्यकारिणी के सदस्य माननीय श्री सुरेश सोनी एवं देव संस्कृति विश्व विद्यालय के प्रतिकुलपति श्री चिन्मय पंड्या के सारगर्भित वक्तव्यों ने चर्चा की दिशा और व्याप निश्चित कर दिया।

यह सम्मेलन WAHA और देव संस्कृति विश्वविद्यालय ने मिलकर किया। हम सब जानते हैं कि गायत्री परिवार वेदों और यज्ञ संस्कृति के प्रसार के लिए एक बड़ी क्रांति कर रहा है। यह विश्व विद्यालय भी इसी अभियान का हिस्सा है। पूरे देश से 250 से अधिक विद्वान इसमें भाग लेने के लिए पधारे। सभी सत्रों में निश्चित विषयों पर गहराई से चर्चा हुई। 'स्व' के जागरण में इस सम्मेलन का बड़ा योगदान माना जाएगा।

राजस्थान के डिस्टर्ब्ड एरिया बिल पर राजनीति

संजय सक्सेना

राजस्थान की राजनीति इन दिनों एक ऐसे प्रस्तावित कानून के इर्द–गिर्द घूम रही है, जिसने सत्ता, विपक्ष, समाज और प्रशासन सभी को आमने–सामने ला खड़ा किया है। राज्य सरकार द्वारा पेश किया गया डिस्टर्ब्ड एरिया बिल 2026 सिर्फ एक विधायी पहल नहीं माना जा रहा, बल्कि इसे सामाजिक ताने–बाने, संपत्ति के अधिकार और राज्य की कानून–व्यवस्था से जोड़कर देखा जा रहा है। सरकार का दावा है कि यह कानून सांप्रदायिक तनाव, जबरन पलायन और जनसँख्या असंतुलन जैसी समस्याओं से निपटने के लिए जरूरी है, जबकि विरोधियों को इसमें भय, दुरुपयोग और राजनीतिक मंशा की आशंका दिख रही है। राज्य में पिछले कुछ वर्षों से ऐसे इलाकों की चर्चा होती रही है, जहाँ सामुदायिक तनाव के बाद एक वर्ग के लोगों को अपने घर, दुकान या जमीन औने–पौने दामों पर बेचकर इलाका छोड़ना पड़ा। सरकार का कहना है कि दबाव, धमकी या सामाजिक असुरक्षा के माहौल में होने वाले ऐसे सौदे न सिर्फ पीड़ित परिवारों को कमजोर करते हैं, बल्कि पूरे क्षेत्र में असंतुलन पैदा कर देते हैं। प्रस्तावित कानून इसी प्रक्रिया पर लगाम कसने की बात करता है। इसके तहत राज्य सरकार को अधिकार होगा कि वह किसी भी इलाके को सीमित अवधि के लिए अशांत क्षेत्र घोषित कर सके और वहाँ संपत्ति के लेन–देन को सख्त नियमों से बांध सके।

सरकार की मंशा यह बताई जा रही है कि अशांत घोषित इलाके में कोई भी अचल संपत्ति बिना सक्षम प्राधिकारी की अनुमति के खरीदी या बेची नहीं जा सकेगी। यह अनुमति तभी मिलेगी जब यह साबित हो कि सौदा पूरी सहमति से, बाजार मूल्य पर और बिना किसी दबाव के हो रहा है। साथ ही किरायेदारों को बेदखली से सुरक्षा देने की भी बात कही गई है। सरकार का तर्क है कि इससे उन परिवारों को राहत मिलेगी, जो वर्षों से किसी इलाके में रहते आए हैं, लेकिन अचानक बदले हालात के कारण खुद को असुरक्षित महसूस करने लगते हैं। बिल में जिस अवधारणा पर सबसे ज्यादा बहस हो रही है, वह है अनुचित जमावड़ा। कानून के मसौदे के अनुसार यदि किसी क्षेत्र में किसी एक समुदाय का ऐसा संकेंद्रण होता है, जो दबाव, मजबूरी या गलत मंशा के कारण हुआ हो और जिससे सामाजिक सौहार्द या सार्वजनिक व्यवस्था प्रभावित होने की आशंका हो तो उस क्षेत्र को अशांत घोषित किया जा सकता है। सरकार का कहना है कि यह प्रावधान भविष्य की आशंकाओं को देखते हुए रखा गया है ताकि हालात बिगड़ने से पहले ही हस्तक्षेप किया जा सके।

सरकार की मंशा यह बताई जा रही है कि अशांत घोषित इलाके में कोई भी अचल संपत्ति बिना सक्षम प्राधिकारी की अनुमति के खरीदी या बेची नहीं जा सकेगी। यह अनुमति तभी मिलेगी जब यह साबित हो कि सौदा पूरी सहमति से, बाजार मूल्य पर और बिना किसी दबाव के हो रहा है। साथ ही किरायेदारों को बेदखली से सुरक्षा देने की भी बात कही गई है। सरकार का तर्क है कि इससे उन परिवारों को राहत मिलेगी, जो वर्षों से किसी इलाके में रहते आए हैं लेकिन अचानक बदले हालात के कारण खुद को असुरक्षित महसूस करने लगते हैं।

राजस्थान की सत्तारूढ़ भारतीय जनता पार्टी सरकार इसे एक एहतियाती कदम बता रही है। उसका तर्क है कि कई इलाकों में जनसँख्या के असंतुलन ने सांप्रदायिक तनाव को जन्म दिया है और मौजूदा कानून ऐसे मामलों से निपटने में नाकाफी साबित हुए हैं। कानून मंत्री जोगाराम पटेल पहले ही यह कह चुके हैं कि कुछ क्षेत्रों में हिंसा और दंगे की घटनाओं के बाद पुराने बाशिंदों को मजबूरी में अपनी संपत्ति बेचनी पड़ी। सरकार का मानना है कि यदि इस प्रवृत्ति को नहीं रोका गया तो हालात और बिगड़ सकते हैं। विपक्षी काँग्रेस इस बिल को सत्ता का दुरुपयोग बताकर विरोध कर रही है। पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष गोविंद सिंह डोटासरा का कहना है कि यह कानून डर का माहौल पैदा करेगा

और प्रशासन को मनमानी का हथियार दे देगा। उनका आरोप है कि सरकार विकास और रोजगार जैसे मुद्दों से ध्यान भटकाने के लिए ऐसे कानून ला रही है, जिनसे समाज में अविश्वास बढ़ेगा। विपक्ष का यह भी कहना है कि किसी इलाके को अशांत घोषित करने की प्रक्रिया पारदर्शी नहीं होगी और इसका इस्तेमाल राजनीतिक या सामुदायिक आधार पर किया जा सकता है।

राज्य सरकार इस आलोचना को खारिज करते हुए कहती है कि कानून में स्पष्ट समय–सीमा तय की गई है। किसी भी क्षेत्र को अधिकतम तीन साल या अधिसूचना में तय अवधि तक ही अशांत रखा जा सकेगा। इसके अलावा शिकायत मिलने पर एक विशेष जांच दल का गठन अनिवार्य होगा, जिसमें प्रशासन, पुलिस और स्थानीय निकाय के वरिष्ठ अधिकारी शामिल होंगे। सरकार का दावा है कि इससे एकतरफा फैसलों की गुंजाइश कम होगी। इस तरह के कानूनों का इतिहास देखा जाए, तो, यह प्रयोग नया नहीं है। देश में सबसे पहले 1983 में पंजाब में अशांत क्षेत्र से जुड़ा कानून बना था, जब वहाँ उग्रवाद अपने चरम पर था। इसके बाद 1991 से गुजरात में भी ऐसा कानून लागू किया गया, जिसे समय–समय पर संशोधित किया गया। हाल के वर्षों में असम सरकार ने भी अलग–अलग समुदायों के बीच जमीन की खरीद–बिक्री को लेकर दिशा–निर्देश जारी किए थे। हालांकि 2016 में केंद्र सरकार ने यह कहते हुए पंजाब को इस श्रेणी से बाहर कर दिया था कि वहाँ हालात सामान्य हो चुके हैं। उस समय केंद्रीय गृह राज्यमंत्री किरण रिजिजू ने स्पष्ट किया था कि पंजाब अब अशांत क्षेत्र नहीं है और वहाँ सशस्त्र बल विशेष अधिकार अधिनियम जैसी व्यवस्थाओं की जरूरत नहीं रही।

राजस्थान के संदर्भ में सरकार कुछ खास इलाकों का उदाहरण देती है, जहाँ वर्षों से रहने वाले परिवारों के पलायन की बातें सामने आई हैं। जयपुर से कुछ दूरी पर स्थित कल्याणी मालपुरा और आसपास के इलाकों के किस्से अक्सर चर्चा में रहते हैं। स्थानीय लोगों का कहना है कि अचानक बदले सामाजिक समीकरणों के कारण डर का माहौल बना और कई परिवारों ने सुरक्षित भविष्य के लिए इलाका छोड़ना बेहतर समझा। सरकार इसी तरह की परिस्थितियों को रोकने के लिए कानून को जरूरी बता रही है। कानून के सख्त प्रावधान भी बहस का कारण है। यदि कोई व्यक्ति अशांत क्षेत्र में नियमों के खिलाफ संपत्ति का लेन–देन करता है तो उसे तीन से पांच साल तक की जेल और भारी जुर्माने का सामना करना पड़ सकता है। सभी अपराधों को संज्ञेय और गैर–जमानती रखने का प्रस्ताव है। सरकार का कहना है कि बिना कड़ी सजा के ऐसे मामलों में रोक लगाना मुश्किल है, जबकि आलोचकों को डर है कि इससे आम नागरिकों को परेशान किया जा सकता है।

कानून का एक संवेदनशील पहलू यह भी है कि इसके दायरे में पुराने सौदे भी आ सकते हैं। यदि किसी संपत्ति का हस्तांतरण अमान्य घोषित होता है, तो विक्रेता को खरीददार को तय समय के भीतर पूरी रकम लौटानी होगी। समर्थकों का कहना है कि यह प्रावधान उन लोगों को न्याय देगा, जो दबाव में आकर अपनी संपत्ति बेचने को मजबूर हुए। विरोधियों को आशंका है कि इससे वर्षों पुराने विवाद फिर से खुल सकते हैं। राजस्थान में यह बहस अब सिर्फ विधानसभा तक सीमित नहीं रही। वकील, सामाजिक कार्यकर्ता और प्रशासनिक विशेषज्ञ भी इसे अलग–अलग नजरिए से देख रहे हैं। कुछ का मानना है कि यदि समस्या गंभीर है और मौजूदा कानून नाकाम हो रहे हैं, तो सख्त कदम जरूरी हो सकते हैं। वहीं यह भी चेतावनी दी जा रही है कि किसी भी नए कानून का दुरुपयोग न हो, वरना उसका असर समाज में अविश्वास और टकराव के रूप में सामने आ सकता है। आने वाले दिनों में यह साफ होगा कि यह बिल कानून बनकर किस दिशा में जाता है और राजस्थान के सामाजिक परिदृश्य को किस तरह प्रभावित करता है ?

skslko28@gmail.com

जब अभिनेत्री मुमताज ने कहा "मुसलमान हिंदुओं से बेहतर कैसे हो जाते हैं?"

डॉ. मयंक चतुर्वेदी

सिनेमा अक्सर कलाकारों की निजी सोच और अनुभव के आधार पर समाज को आइना दिखाता है। सत्तर के दशक की लोकप्रिय अभिनेत्री 'मुमताज' ने हाल ही में एक साक्षात्कार में विवाह, धर्म और सामाजिक सोच को लेकर ऐसी बेबाक टिप्पणी की, जिसने संपूर्ण भारतीय समाज को एक आइना दिखाया है। एक मुस्लिम परिवार में जन्म लेने के बावजूद उन्होंने अपने अनुभवों के आधार पर हिंदू परिवार व्यवस्था की भरपूर सराहना की और बहुविवाह जैसी प्रथाओं पर सवाल उठाते हुए कहा कि 'किसी भी धर्म में स्त्री के अधिकारों और सम्मान से बड़ा कुछ नहीं हो सकता है।'

भारतीय सिनेमा का सत्तर का दशक परिवर्तन के दौर का साक्षी रहा है। तकनीक बदल रही थी, कहानियों का स्वरूप बदल रहा था, सिनेमा ब्लैक–एंड–व्हाइट से रंगीन दौर की जगमगाहट में प्रवेश कर रहा था और उसी समय पर्दे पर अभिनेत्री 'मुमताज' का उदय हुआ, जिसने अपने अभिनय, सौंदर्य और भावनात्मक अभिव्यक्ति से दर्शकों के दिलों में खास जगह बनायी। 'मुमताज' ने अपने करियर में कई यादगार फिल्में दीं। उस दौर में उनकी लोकप्रियता इतनी अधिक रही कि निर्माता–निर्देशक उन्हें अपनी फिल्मों में लेने को उत्सुक रहते। उनकी फिल्मों में भावनाओं की गहराई, नृत्य की लय और अभिनय की सहजता देखने को मिलती। यही कारण है जो आज नई पीढ़ी की अभिनेत्रियाँ भी उनके अभिनय को देखकर भावों के उतार–चढ़ाव की बारीकियाँ सीखने की बात कहती हैं।

'मुमताज' और उनकी बहन दोनों ने किया हिन्दू परिवार में विवाह

दरअसल, हाल ही में 'मुमताज' ने यूट्यूब चैनल 'सितारों का सफर' के लिए एक 'साक्षात्कार' किया है। स्वयं के जीवन से जुड़ी तमाम कहानियों के बीच वे अपने आप को ये कहने से रोक नहीं सकीं कि उन्होंने एक हिन्दू परिवार में विवाह किया है, न सिर्फ उन्होंने बलकि उनकी बहन ने भी हिन्दू परिवार में ही विवाह किया। वास्तव में हिन्दू जीवन और परिवार आदर्श है। वे कहती है, "मैं दोनों धर्मों में विश्वास रखती हूँ। मैंने एक हिंदू से शादी की है और मेरी बहन ने भी एक हिंदू से शादी की है। हम दोनों खुश हैं। मेरे पति मेरा बहुत ख्याल रखते हैं। मुझे समझ नहीं आता कि लोग हिंदू और मुस्लिम विभाजन की बात क्यों करते रहते हैं, मैं इसमें विश्वास नहीं करती।"

जब उनका करियर सफलता के शिखर पर था, तब उन्होंने एक ऐसा निर्णय लिया, जिसने पूरी फिल्म इंडस्ट्री को चौंका दिया। वर्ष 1974 में उन्होंने व्यवसायी मयूर माधवानी से विवाह कर लिया और फिल्मों से दूरी बना ली। मुमताज और मयूर माधवानी की दो बेटियाँ हैं; नताशा माधवानी और तान्या माधवानी। उन्होंने बताया कि यह निर्णय उनके परिवार की सलाह से लिया गया था। उनकी माँ ने उन्हें समझाया कि माधवानी परिवार बहुत अच्छा है और वहाँ उन्हें सुखी जीवन मिलेगा।

'मुमताज' के अनुसार उनके परिवार में एक निश्चित समय पर विवाह करना जरूरी माना जाता था, इसलिए उन्होंने अपने सभी फिल्मी प्रोजेक्ट जल्द से जल्द पूरे किए। जिन फिल्मों में अधिक समय लगने वाला था, उनके लिए उन्होंने निर्माताओं को पैसे भी वापस कर दिए। फिल्मों से दूरी बनाने और उन्हें पूरा करने में उन्हें लगभग दो वर्ष लगे, क्योंकि पहले से किए गए अनुबंध पूरे करना जरूरी था। लेकिन आज वे इस निर्णय को अपने जीवन का सबसे संतुलित और सुखद फैसला मानती हैं।

मुसलमानों का बहुविवाह गलत

इस बातचीत के दौरान मुमताज ने कुछ मुस्लिम समाजों में प्रचलित बहुविवाह की प्रथा पर भी खुलकर अपनी राय रखी। उन्होंने कहा कि वे व्यक्तिगत रूप से इस प्रथा से सहमत नहीं हैं। उनका मानना है कि हर स्त्री अपने पति से प्रेम करती है और उसे किसी और के साथ बाँटना नहीं चाहती। ऐसे में यदि कोई पुरुष एक के बाद दूसरी, तीसरी या चौथी शादी करता है, तो यह रिश्तों की गरिमा के खिलाफ है। उन्होंने सवाल उठाया कि

यदि कोई पुरुष बार–बार विवाह करके अपनी पत्नी को छोड़ देता है, तो इससे वह किसी दूसरे धर्म के लोगों से बेहतर कैसे हो जाता है। उनके अनुसार विवाह का अर्थ जिम्मेदारी और प्रतिबद्धता है, न कि सुविधा के अनुसार रिश्ते बदल लेना।

उन्होंने कहा, "मैं हमेशा कहती हूँ कि मैंने एक हिंदू से शादी की है, मेरी बहन ने भी और हम बहुत खुश हैं। मुसलमानों में, कई पुरुष तीन या चार बार शादी करके अपनी पत्नियों को छोड़ देते हैं। इससे मुसलमान हिंदुओं से बेहतर कैसे हो जाते हैं? किसी पुरुष को तीन या चार बार शादी करनी ही नहीं चाहिए। मैं खुद मुस्लिम हूँ और मैं कहती हूँ कि यह गलत है, एक पत्नी को रखना, फिर दूसरी से शादी करना, और फिर तीसरी से। क्या आपने कभी सोचा है कि रिश्ते में महिलाएँ कितनी अधिकार जताने वाली होती हैं? यह एक ऐसा रिश्ता है, जहाँ हर महिला अधिकार जताने वाली होती है। एक को छोड़कर दूसरी से शादी करना, यह कैसे सही है? क्या यह पाप नहीं है?"

हिंदू परिवारों में विवाह है स्थायी और पवित्र बंधन

मुमताज ने कहा कि उनके अनुभव में अधिकांश हिंदू परिवारों में विवाह को स्थायी और पवित्र बंधन माना जाता है। आमतौर पर लोग एक ही बार विवाह करते हैं और जीवन भर उसी रिश्ते को निभाने का प्रयास करते हैं। उन्होंने यह भी स्वीकार किया कि कभी–कभी दूसरी शादी की घटनाएँ भी होती हैं, लेकिन इसे सामान्य या आसान विकल्प नहीं माना जाता। उनके अनुसार रिश्तों को निभाने की यह सोच परिवार को स्थिरता देती है और स्त्रियों को सुरक्षा का भाव भी प्रदान करती है।

उन्होंने कहा कि हर स्त्री अपने पति को प्रेम करती है और वह उसे बाँटना नहीं चाहती, ये क्या बात हुई, एक लियाओ, दो लियाओ, तीन लियाओ या चार लियाओ? उन्होंने कहा, "इस लिहाज से हिंदू बेहतर लगते हैं, वे आमतौर पर एक ही बार शादी करते हैं। कभी–कभी वे दो बार भी शादी कर सकते हैं, लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि वे आसानी से एक व्यक्ति को छोड़कर दूसरे के पास चले जाते हैं। यह गलत है।"

मुस्लिम होते हुए भी हिंदू देवी–देवताओं में आस्था

धर्म के बारे में बात करते हुए मुमताज ने यह भी बताया कि वे जन्म से मुस्लिम हैं, लेकिन उनके मन में हिंदू देवी–देवताओं के प्रति गहरी श्रद्धा है। उन्हें विशेष रूप से भगवान शिव और भगवान श्रीकृष्ण में आस्था है। उनके घर की सीढ़ियों के पास भगवान गणेश की मूर्ति रखी है, जिसे वे प्रतिदिन प्रणाम करती हैं। उनका कहना है, "मेरे प्रिय भगवान शंकर और भगवान कृष्ण हैं। मैं मुस्लिम होते हुए भी उनमें गहरी आस्था रखती हूं।"

उन्होंने आगे बताया कि घर पर उनकी दिनचर्या में धार्मिक अनुष्ठान शामिल हैं। "जब भी मैं घर की सीढ़ियों से नीचे उतरती हूँ, तो वहाँ भगवान गणेश की मूर्ति होती है, जो मेरे प्रिय हैं और मैं उनके चरणों में प्रणाम करती हूँ। मैं भगवान शंकर में भी आस्था रखती हूँ। बचपन से ही मुझे सुंदर और दिव्य प्रतीकों की ओर आकर्षण रहा है, इसलिए मुझे भगवान शिव का स्वरूप अत्यंत आकर्षक और आध्यात्मिक लगता है। मुझे लगता है कि वह सबसे सुंदर देवता हैं। इसलिए मैं उन्हें पूजती हूँ। ये दो देवता हैं, जिनमें मैं विशेष रूप से विश्वास करती हूँ।"

निजी जीवन में संतोष और संतुलन

मुमताज ने अपने वैवाहिक जीवन के बारे में भी बड़ी सहजता से बात की। उन्होंने कहा कि उनके पति उनका बहुत ध्यान रखते हैं और उन्हें जीवन में किसी चीज की कमी महसूस नहीं होती। उनके अनुसार जीवन की असली सफलता सिर्फ पेशेवर उपलब्धियों तक सीमित नहीं मानी जानी चाहिए, वह वास्तव में परिवार की खुशियों में छिपी होती है। यही कारण है कि फिल्मों की चमक–दमक से दूर होकर भी वे अपने निर्णय से संतुष्ट हैं।

उन्माद एक मानसिक रोग

– मुरारी शरण शुक्ल

दूषित एवं अमेध्य अन्नपान के कारण तथा भय, शोक आदि के समप्ल्व (आवेग) से मन की स्मृति का विक्षोभ हो जाना ही 'उन्माद' रोग कहलाता है। सिद्धसार संहिता 20/1 (दुष्टामेध्यान्नपानेच्छा –भयशोकादिसम्प्लवात्।)

उन्माद– एक मानसिक व्याधी

एक, दो अथवा तीनों दोषों की विकृति से मनुष्य की मनोवृति विक्षिप्त सी हो जाती है, इसे आयुर्वेद के पण्डितों ने 'उन्माद' कहा है। जब व्यक्ति को वार्तालाप करते समय तथा गीत गाते समय बीच–बीच में विस्मृति होने लगे और पवित्रता व अपवित्रता का भेद–बोध न रहे, उसे वैद्य उन्माद रोग कहते हैं।

ब्राह्मण आदि सज्जन, देवता, साधु, संन्यासी तथा पतिव्रता स्त्री को पीड़ित करना उन्माद का कारण होता है। कुत्सित मन्त्रों की साधना तथा दूषित एवं अपवित्र द्रव्यों का खानपान भी उन्मादरोग का कारण बनता है। भिषक्चक्रचित्तोत्सवः (हंसराज निदानम्) – 26/1–3

उन्माद का लक्षण

कुपित हुए दोष, विरूद्ध मार्गों पर चलकर तथा उत्तमांग में जाकर चित्त को विक्षिप्त कर देते हैं, इस मानसिक रोग को उन्माद कहते हैं। अत्यन्त प्रकुपित वात, पित्त और कफ से पृथक–पृथक तीन, त्रिदोष के सम्मिलित होने से चौथा, मानसिक क्लेश से पाचवाँ तथा विष भक्षण करने से छठे प्रकार का उन्माद होता है, इस उन्माद के नवीन रहने पर इसे मद की संज्ञा दी जाती है। सुश्रुत संहिता, उन्माद अध्याय– 62

उन्माद अर्थात् मानस रोग का विवरण

(चरक संहिता– निदानस्थानम, सप्तम अध्याय) भगवान पुनर्वसु आत्रेय ने कहा कि उन्माद पाँच प्रकार के होते हैं–

1. वात के कारण उपजे उन्माद
2. पित्तज उन्माद
3. कफ जनित उन्माद
4. सन्निपात से होने वाले उन्माद, तथा
5. आगन्तुक कारण से उत्पन्न होनेवाले उन्माद

शरीर के विभिन्न दोषों के कारण उपजने वाले आरम्भिक चार उन्माद–वातावरण, पित्तज, कफज और सन्निपातज, ये पुरुषों को शीघ्र हो जाते हैं।

डरपोक, दुःखित मनवालों, जिनमें वात आदि दोष बढ़े हुए हों, मलयुक्त या विकृत द्रव्यों से युक्त तथा अनुचित आहार, जिसके सेवन का अभ्यास नहीं, ऐसे आहारों का विषम उपयोग विधि द्वारा सेवन करने से। अर्थात् प्रकृति आदि आठ आहार विधि –विष। शेषायतनों के विरुद्ध आहार करने से।

सद्वृतोक्त विधि का विषमता से पालन करने वालों अथवा अभीष्ट देवता आदि की सिद्धि के लिए तन्त्रों में कहे गए प्रयोगों को विषम रूप से करने वालों, अथवा किसी अन्य उल्टी चेष्टा को करने वालों, अत्यन्त क्षीण शरीर वालों, रोग के वेग से चकराए हुए रोगी, अथवा जिन का मन घबरा गया है उनके, काम–क्रोध–लोभ–हर्ष–भय–मोह–थकावट–शोक–चिन्ता तथा उद्वेग आदि के बारम्बार चोटों से घायल हुए पुरूषों के मन के आहत हो जाने तथा बुद्धि के स्थिर न रहने पर प्रवृद्ध हुए वात आदि दोष प्रकुपित हो हृदय में जाकर मनोवैज्ञानिक स्रोतों को आच्छादित कर के उन्माद को अत्यन्त कुपित कर देते हैं।

हिंदू पर्वों पर जिहादी हमलों की सूची जारी करते हुए विहिप की चेतावनी

हिंदुओं को जिहादियों की भाषा में उत्तर देने को विवश न किया जाए

नई दिल्ली, 9 मार्च, 2026। होली के पावन पर्व पर तरुण खटीक की जिहादियों के बर्बर झुंड द्वारा की गई मॉब लिंचिंग की विश्व हिंदू परिषद ने कठोर शब्दों में निंदा की है। विहिप के केंद्रीय संयुक्त महामंत्री डॉ. सुरेंद्र जैन ने कहा कि दिल्ली के उत्तम नगर में सात साल की मासूम बच्ची ने अपने ताऊजी पर पानी का गुब्बारा फेंका था, जिसके चंद छींटे वहाँ से गुजर रही एक मुस्लिम महिला के कपड़ों पर क्या गिरे, पहले तरुण के माता–पिता और ताऊ जी को निर्ममता से पीटा। फिर तरुण की तलवारों, पत्थरों व लाठियाँ से सरेआम नृशंस हत्या कर दी गई। क्या उस महिला को नहीं पता था कि होली रंगों का त्योहार है और उसके छींटे किसी पर भी गिर सकते हैं ?

उस महिला का होली पर बाहर निकलना और पानी के छींटे गिरते ही 25–30 जिहादियों की भीड़ का हथियारों के साथ तुरंत बाहर आकर हिंसा का नंगा नाच करना, महज संयोग नहीं हो सकता। अभी तक इस हत्याकांड की मुख्य षड्यंत्रकारी उस महिला को गिरफ्तार तक नहीं किया गया। उसे अविलंब गिरफ्तार कर कड़ाई से पूछताछ करनी चाहिए। देश भर में यह देखा गया है कि जिहादी अक्सर दंगाई महिलाओं और अवयस्कों को ही आगे करते हैं, जिससे वे कानूनी कार्यवाही से बच सकें। अब उनकी इस रणनीति पर भी रोक लगाने का समय आ गया है।

डॉ. जैन ने प्रेस वार्ता को संबोधित करते हुए कहा कि हिंदू त्योहारों व शोभा यात्राओं पर हमले तथा मॉब लिंचिंग कर हिंदुओं की हत्या करने का यह एकमात्र उदाहरण नहीं है। इसी वर्ष पावन होली पर हिंदुओं के खून से होली खेलने के लिए 11 से अधिक हमले किए गए। पिछले 10 वर्षों में केवल होली पर हमलों की 42 से अधिक शिकायतें दर्ज की जा चुकी हैं। होली ही नहीं, हिंदुओं का कोई भी पर्व ऐसा नहीं है, जिस पर जिहादी हिंदुओं पर हमले न करते हों। पिछले 10 वर्षों में हिंदुओं के त्योहारों पर 240 से अधिक बार प्राणघातक हमले किए गए, जिनमें कई हिंदुओं को घेर कर मारा गया। इनकी सूची इस विज्ञप्ति के साथ जारी की गई है, जो सिर्फ शिकायत की गई कतिपय घटनाओं पर आधारित है। वास्तविकता और भी भयावह है।

उन्होंने कहा कि जिहादियों में हिंदुओं के प्रति क्रूरता और घृणा बढ़ती जा रही है। उधर उत्तम नगर के हिंदू समाज की प्रतिक्रिया से भी इन्हें स्पष्ट हो गया होगा कि अब हिंदू समाज का आक्रोश भी बढ़ रहा है। वह सिर्फ कानूनी कार्यवाही की प्रतीक्षा में हाथ पर हाथ रखकर बैठने वाला नहीं है। रामास्वामी उदयार मामले में माननीय उच्च न्यायालय की यह टिप्पणी सबको स्मरण रखनी चाहिए कि अगर एक वर्ग हिंदुओं को अपने उत्सव व शोभा यात्राओं के आयोजन में बाधा डालता है, तो उस वर्ग को भी सोचना पड़ेगा कि वह वहाँ अपने धार्मिक आयोजन कैसे कर सकेगा, जहाँ वह अल्पसँख्यक है?

विहिप मदनी, ओवैसी और वर्क

जैसे कट्टरपंथियों और उनके साथ गठजोड़ करने वाले कथित सेक्युलर नेताओं को चेतावनी देती है कि वह हिंदू समाज को उस तरीके से जवाब देने के लिए मजबूर न करें, जिन तरीकों का उपयोग हिंदुओं के विरुद्ध हो रहा है।

छोटी–छोटी बातों पर आसमान सर पर उठाने वाले राहुल गाँधी समेत सभी नेता तरुण की निर्मम हत्या पर आज तक चुप हैं। इससे स्पष्ट होता है कि ये लोग इन सब हत्याकांडों को मौन समर्थन दे रहे हैं। जिहादी हिंसा के शिकार तरुण जैसे कई युवक अनुसूचित समाज से आते हैं। इस समाज के अधिकारों के लिए संघर्ष का दिखावा करने वाले मीम–भीम वादी, सेक्युलर व भाईचारे की डींग हांकने वाले नेताओं के होंठ क्यों सिल जाते हैं, यह बहुत आश्चर्यजनक है। विश्व हिंदू परिषद ने तरुण की मॉब लिंचिंग करने वाले कुछ हत्यारों पर की गई त्वरित कार्यवाही का स्वागत करते हुए कहा है कि मुख्य षड्यंत्रकारी महिला सहित कई अन्य अपराधी व षड्यंत्रकारियों पर सख्त कार्यवाही शेष है। डॉ. सुरेंद्र जैन ने यह भी कहा कि हम हिंदू समाज की रक्षा के लिए कटिबद्ध हैं तथा उसके लिए हर प्रकार के संविधान सम्मत उपाय करने के लिए भी तत्पर हैं।

विहिप की मांग है कि–

1. अपराधियों पर ऐसी सख्त कार्यवाही की जाए, जिससे शेष जिहादियों को ऐसी हरकत करने से पहले 10 बार सोचना पड़े।
2. जिहादियों को भड़काने वाले मुल्ले –मौलवियों पर भी सख्त कार्यवाही की आवश्यकता है। कट्टरपंथ और आतंकवाद के कारखाने बन चुके मदरसों पर पूर्ण और तत्काल प्रतिबंध की आवश्यकता है।
3. दिल्ली सहित सभी राज्य सरकारें ऐसे जांच आयोगों का गठन करें, जो इस बढ़ती जिहादी क्रूरता और हिंदुओं के प्रति फैलाई जा रही घृणा के साथ जिहादियों को सजा न मिल पाने के कारणों की भी गहन जांच कर दोषियों के विरुद्ध कठोरतम कार्यवाही की अनुशंसा कर सकें।

विहिप का सांसद संपर्क अभियान शुरु

नई दिल्ली, 11 मार्च, 2026। विश्व हिंदू परिषद का त्रि–साप्ताहिक सांसद संपर्क अभियान 27 मार्च तक चलेगा। विहिप के केंद्रीय महामंत्री श्री बजरंग लाल बागड़ा ने आज एक प्रेस वार्ता में बताया कि इसी सोमवार यानि 9 मार्च को प्रारंभ हुए विशेष सांसद संपर्क अभियान के अंतर्गत हम देश के दोनों सदनों के सभी सांसदों से मिलकर तीन ज्वलंत विषयों पर चर्चा करेंगे। उन्होंने कहा कि हालांकि हर शीतकालीन सत्र के दौरान सांसद संपर्क हमारी वार्षिक योजना का एक हिस्सा है, किंतु इस वर्ष उस सत्र की अवधि कम होने के कारण बजट सत्र में यह आयोजित किया गया है। इस वर्ष हम कुछ विशेष विषयों को लेकर देश के कानून निर्माताओं से निवेदन करेंगे। उन्होंने कहा कि वर्तमान समय में जनसँख्या असंतुलन पर एक व्यापक राष्ट्रीय चिंतन की आवश्यकता है। पिछली अनेक सरकारों ने इस बारे में अपने–अपने तरीके से काम किया, लेकिन अब आवश्यकता इस बात की है कि इसकी बारीकियों पर चिंतन कर एक प्रभावी जनसँख्या नीति बने और नारी सशक्तिकरण, स्वास्थ्य सेवाओं के विस्तार तथा क्षेत्रीय और सांप्रदायिक जनसँख्या संतुलन नीतियों जैसे माध्यमों के साथ जन मन की सहभागिता से यह कार्य आगे बढ़े।

भारत धर्म प्राण देश है, जिसकी आत्मा तीर्थों में बसती है और तीर्थ विकास के बिना भारत के विकास की कल्पना अधूरी है। तीर्थ यात्राओं का देश की अर्थव्यवस्था में उल्लेखनीय योगदान है। इसलिए हम सभी सांसदों से निवेदन करेंगे कि देश के तीर्थक्षेत्रों का समुचित विकास हो और वे भारत की अर्थव्यवस्था, संस्कृति और स्वाभिमान के केंद्र बिंदु बनकर पुनः धर्म, आध्यात्म और मानव कल्याण के वैश्विक प्रहरी बनें। मंदिरों को सरकारी नियंत्रण से मुक्ति मिले, हिंदू का पैसा हिंदू हित में काम आए तथा तीर्थाटन के विकास के लिए संस्कृति मंत्रालय में एक स्वतंत्र विभाग का गठन कर इनका चहुंमुखी विकास हो।

तीसरे विषय के रूप में हम संविधान के अनुच्छेद 29 और 30 के प्रावधानों को देश के सभी नागरिकों के लिए समान रूप से लागू करने के लिए उनसे निवेदन करेंगे, जिससे कि सभी धर्मों को धार्मिक शिक्षा का भेदभाव रहित समान संवैधानिक अधिकार सुनिश्चित हो सके। साथ ही अल्पसँख्यक को परिभाषित करने की आवश्यकता को भी रेखांकित करेंगे। विहिप महामंत्री ने बताया कि यह अभियान तीन चरणों में होगा। अलग–अलग चरणों में देश के अलग–अलग प्रांतों से आए हुए कार्यकर्ता अपने–अपने क्षेत्र के सांसदों से राजधानी दिल्ली में संपर्क कर रहे हैं। पहला चरण 9 से 13 मार्च तक होगा और दूसरा 16 से 20 मार्च तक। इसके बाद 23 मार्च से 27 मार्च तक इस अभियान का समापन सप्ताह होगा। उन्होंने बताया कि हम बिना किसी राजनीतिक या विचार भेदभाव के हर दल के, हर मत, पंथ, संप्रदाय के और हर क्षेत्र के सांसद से मिलकर खुलकर अपनी बात उनके समक्ष रखेंगे। प्रेस वार्ता में विश्व हिंदू परिषद के केंद्रीय मंत्री तथा अखिल भारतीय विशेष संपर्क प्रमुख श्री अंबरीश सिंह भी मौजूद थे।

vinodbansal01@gmail.com

एक संगत व पंगत से अपनत्व बढ़ता है - विनायक राव देशपांडे

चित्तौड़गढ़, 11 मार्च। विश्व हिन्दू परिषद, बजरंग दल एवं मातृशक्ति, दुर्गावाहिनी (चित्तौड़गढ़ विभाग) के तत्वावधान में रविवार को इंदिरा प्रियदर्शिनी ऑडिटोरियम में 'समरसता संगोष्ठी : संगत और पंगत' कार्यक्रम अत्यंत उत्साह और गरिमा के साथ संपन्न हुआ। मुख्य वक्ता विहिप के केंद्रीय सह संगठन महामंत्री विनायक राव देशपांडे ने ओजस्वी उद्बोधन में सामाजिक समरसता पर विशेष बल दिया। उन्होंने कहा कि जाति, वर्ण और आर्थिक असमानता की बेड़ियों को तोड़कर ही एक सशक्त राष्ट्र का निर्माण संभव है। उन्होंने कहा कि सदियों पहले ऐसे जातिगत भेदभाव नहीं थे। यह सब तो हमारी संस्कृति को नष्ट करने के षड़यंत्र के चलते मुगलों द्वारा किया गया है। हम सब एक देश में समरस हो कर रहते थे। उसका जीता जागता उदाहरण हमारे यहाँ आयोजित होने वाले कुंभ मेले हैं, जहाँ बिना किसी जातिगत भेदभाव के एक घाट पर हर कोई स्नान कर सकता है।

उन्होंने आह्वान किया कि छुआछूत और ऊंच–नीच की भावना को जड़ से समाप्त कर हमें 'हिन्दू हम सब भाई–भाई' के भाव को आत्मसात करना चाहिए। संगत और पंगत के महत्व को समझाते हुए उन्होंने स्पष्ट किया कि जब हम साथ बैठते हैं (संगत) और साथ भोजन करते हैं (पंगत) तब हृदय की दूरियाँ मिटती हैं और अपनत्व बढ़ता है।

सेवा ही धर्म के ध्येय को आत्मसात करते हुए समाज के वंचित और पिछड़े वर्ग को गले लगाना ही सच्ची ईश्वर सेवा है। उन्होंने साँस्कृतिक एकता पर जोर देते हुए कहा कि हमारी जड़ें एक हैं, हमारे पूर्वज एक हैं, इसलिए समाज में किसी भी आधार पर विभाजन स्वीकार्य नहीं है। कार्यक्रम में संत विनोद जी यति महाराज ने अपने आशीर्वचन में कहा कि धर्म वही है, जो जोड़ना सिखाता है, तोड़ना नहीं।

कार्यक्रम में चित्तौड़गढ़, निम्बाहेड़ा और प्रतापगढ़ सहित आसपास के क्षेत्रों से सैकड़ों की सँख्या में लोग सम्मिलित हुए। पूरा ऑडिटोरियम 'भारत माता की जय', 'जय जय श्री राम' और 'जयकारे वीर बजरंगी' के गगनभेदी नारों से गुंजायमान हो उठा।

कार्यक्रम की रूपरेखा और साँस्कृतिक छटा

कार्यक्रम का शुभारंभ अतिथियों द्वारा दीप प्रज्जवलन के साथ हुआ। इसके पश्चात दुर्गा वाहिनी नगर संयोजिका अंजलि सेन के शुभांजलि ग्रुप की बहनों द्वारा शौर्य का प्रतीक 'खड्ग नृत्य' प्रस्तुत किया गया, जिसने उपस्थित जनसमूह में जोश भर दिया। विभाग मंत्री विश्वनाथ टांक ने स्वागत भाषण के माध्यम से सभी आगंतुकों का अभिनंदन किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता राधेश्याम अमेरिया द्वारा की गई। दुर्गा वाहिनी विभाग संयोजिका लोपामुद्रा जोशी द्वारा समरसता विषय पर सुमधुर 'काव्य गीत' ने राष्ट्रभक्ति और सामाजिक चेतना का संचार किया। उसके बाद विहिप चित्तौड़ प्रांत के अध्यक्ष प्रताप सिंह नागदा ने अपना उद्बोधन दिया। कार्यक्रम का संचालन नगर मंत्री अभिनन्दन काबरा और नगर सह मंत्री जयेश भटनागर द्वारा किया गया।

तत्पश्चात कार्यक्रम के मुख्य वक्ता विनायक राव देशपांडे विहिप के केंद्रीय सह संगठन महामंत्री का विहिप के जिला मंत्री चंद्र शेखर सोनी और बजरंग दल के जिला संयोजक मनोज साहू व मातृ शक्ति व दुर्गा वाहिनी की जिला संयोजिका शिवानी साहू व दीपिका छिपा के नेतृत्व में तलवार और विजय स्तंभ का प्रतीक और जौहर की छवि भेंट कर स्वागत किया गया।

अंत में बजरंग दल विभाग संयोजक योगेश दशोरा ने समरसता मंत्र का वाचन किया। कार्यक्रम के सफल आयोजन पर विहिप जिलाध्यक्ष किशन पिछोलिया ने सभी का आभार व्यक्त करते हुए सामाजिक समरसता के संदेश को जीवन में उतारने का आग्रह किया तथा आगे भी इसी तरह स्नेह, सहयोग और आशीर्वाद की अपेक्षा की। संगोष्ठी के पश्चात ऑडिटोरियम परिसर में ही सामूहिक 'भोज–प्रसाद' का आयोजन हुआ, जहाँ सभी वर्गों के लोगों ने एक साथ बैठकर भोजन कर 'समरसता' का जीवंत उदाहरण प्रस्तुत किया। कार्यक्रम में विश्व हिंदू परिषद के राजस्थान के क्षेत्र मंत्री सुरेश चन्द्र उपाध्याय, दुर्गा वाहिनी की राजस्थान संयोजिका लता पाण्डिया, प्रांत मंत्री कौशल गौड़, प्रांत सहमंत्री सुंदर कटारिया, युधिष्ठिर सिंह, अनिल चतुर्वेदी, मनोज सोनी, मदन त्रिपाठी, मुकेश नाहटा, संघ के विभाग कार्यवाह दिनेश भट्ट, विहिप पूर्व प्रांत मंत्री लक्ष्मीनारायण जोशी सहित सैकड़ों की सँख्या में समाज के बंधु–भगिनी उपस्थित थे।

vskchittor@gmail.com

संघ के विस्तार का अर्थ राष्ट्रीय विचार का विस्तार : दत्तात्रेय होसबाले जी

समालखा, पानीपत (हरियाणा), 15 मार्च 2026। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की तीन दिवसीय अखिल भारतीय प्रतिनिधि सभा की बैठक संगठन कार्य में विस्तार, राष्ट्रहित में समाज की सज्जन शक्ति की अधिक सक्रियता और सामाजिक समरसता के संकल्प के साथ सम्पन्न हो गई। बैठक के अंतिम दिन संघ के सरकार्यवाह दत्तात्रेय होसबाले जी ने पत्रकारों से संवाद में बताया कि पिछले वर्ष में संगठन कार्य का उल्लेखनीय विस्तार हुआ है। संघ की शाखाएँ लगभग छह हजार की वृद्धि के साथ 88 हजार से अधिक हो गई हैं तथा स्थान भी बढ़कर 55 हजार से अधिक हो गए हैं। इसके साथ ही साप्ताहिक मिलन और मंडली की सँख्या भी बढ़ी है। संगठन कार्य में विस्तार को इस प्रकार देखना भी आवश्यक है कि अंडमान, अरुणाचल प्रदेश, लेह और दुर्गम जनजातीय क्षेत्रों में भी संघ की शाखाएँ संचालित हो रही हैं। संघ शताब्दी वर्ष के कार्यक्रमों में भी इस सांगठनिक विस्तार को स्पष्टता से देखा जा सकता है।

उन्होंने कहा कि सांगठनिक विस्तार के साथ संघ समाज में गुणवत्ता संवर्धन के लिए भी निरंतर कार्य कर रहा है। पंच परिवर्तन के माध्यम से समाज को सकारात्मक परिवर्तन के लिए प्रेरित करना महत्वपूर्ण है। भारतीय अथवा हिन्दुत्व केवल एक विचार नहीं, बल्कि जीवन शैली है और इसके माध्यम से समाज में गुणवत्ता का विस्तार होना चाहिए। इसी उद्देश्य से समाज की सज्जन शक्ति को एकत्र करना और Power of Good का राष्ट्रहित में प्रवृत्त होना आवश्यक है। सरकार्यवाह जी ने कहा कि समाज में महापुरुषों के कार्यों को जाति, पंथ के भेद से ऊपर उठकर स्वीकार करना चाहिए और उनके माध्यम से समाज को सकारात्मक परिवर्तन के लिए आगे बढ़ना चाहिए। संघ के स्वयंसेवकों ने इसी दिशा में नवम गुरु श्री तेग बहादुर जी के बलिदान के 350वें वर्ष के अवसर पर देशभर में 2 हजार से अधिक कार्यक्रम किए, जिनमें 7 लाख से अधिक लोग सम्मिलित हुए। इसी प्रकार राष्ट्रगीत वंदेमातरम की 150वीं वर्षगांठ भी उत्साहपूर्वक मनाई गई। आगामी वर्ष में संत शिरोमणि

रविदास जी महाराज के 650वें प्राकट्य वर्ष पर कार्यक्रमों की योजना बनी है।

संघ के आगामी वर्ष के नियमित प्रशिक्षण वर्गों की जानकारी दी और बताया कि 11 क्षेत्र के वर्ग तथा एक नागपुर के वर्ग को मिलाकर कुल 96 प्रशिक्षण वर्ग संचालित किए जाएंगे। प्रतिनिधि सभा में गौसेवा और ग्राम विकास की भी योजनाओं पर विचार किया गया है। नागरिकों को प्रेरित किया जाएगा कि वे घर की छत पर सब्जी उगाएँ, उसमें देसी गोबर और गौमूत्र की खाद का उपयोग करें। जिससे गौसंवर्धन में सभी सहयोग कर सकते हैं। इसी तरह हरित घर बनाने का भी संकल्प नागरिक ले सकते हैं, जिससे घर में पॉलीथीन का न्यूनतम उपयोग, जल संरक्षण आदि प्रयास किए जा सकते हैं।

संघ की संगठनात्मक संरचना में परिवर्तन संबंधित प्रश्न पर उन्होंने कहा कि संरचना में विकेन्द्रीकरण पर विचार हुआ है, जिसमें प्रांत के स्थान पर छोटी इकाई संभाग बनाने का प्रस्ताव है, जिसके लागू होने पर 46 प्रांतों के स्थान पर 80 से अधिक संभाग होंगे।

एक अन्य प्रश्न के उत्तर में सरकार्यवाह जी ने कहा कि समाज में जातिगत आधार पर विभेद को समाप्त करने के लिए मीडिया को भी आगे आना चाहिए और किसी भी चुनाव में मतदाताओं की सँख्या का जाति आधारित आँकलन बंद करना चाहिए। वर्तमान अंतरराष्ट्रीय परिस्थितियों में देश की सरकार द्वारा राष्ट्रहित में किए जा रहे कूटनीतिक प्रयासों की सराहना की और कहा कि संघ विश्व में शांति और विकास का पक्षधर है।

एक अन्य प्रश्न के उत्तर में उन्होंने कहा कि डॉ. हेडगेवार ने किसी समुदाय और पंथ–पूजा पद्धति के विरोध के लिए संघ की स्थापना नहीं की। संघ के दूसरे सरसंघचालक श्री गुरुजी ने भी कहा था कि हम सबके पूर्वज एक हैं और पूजा–पाठ की पद्धति की भिन्नता से कोई अंतर नहीं आता, इसमें डीएनए शब्द नहीं था, किंतु अभिप्राय यही था। तीसरे सरसंघचालक बालासाहब देवरस ने भी कहा था कि भारत को अपनी मातृभूमि व अपना राष्ट्र मानने वाले और भारतीयता को जीने वाले सभी हिन्दू हैं। संघ में सबका स्वागत है, जो भी समाज के लिए अच्छा कार्य कर रहा है, हम उसको संघ का स्वयंसेवक ही मानते हैं।

अंडमान, अरुणाचल सहित पूरे देश में संघ के लिए समाज में उत्साह

अंडमान में प्रमुख 9 द्वीपों में से 13 हजार से अधिक लोग सरसंघचालक जी की उपस्थिति में हुए हिन्दू सम्मेलन में सम्मिलित हुए। इसी प्रकार अरुणाचल प्रदेश जैसे कम जनसँख्या घनत्व वाले प्रदेश में भी 21 स्वधर्म सम्मेलनों में 37 हजार से अधिक लोगों ने सहभागिता की।

जाति–पंथ के भेद से ऊपर उठकर हो महापुरुषों का सम्मान एवं अनुकरण

समाज में महापुरुषों के कार्यों को जाति, पंथ के भेद से ऊपर उठकर स्वीकार करना चाहिए और उनके माध्यम से समाज को सकारात्मक परिवर्तन के लिए आगे बढ़ना चाहिए। संघ के स्वयंसेवकों ने इसी दिशा में नवम गुरु श्री तेगबहादुर जी के बलिदान के 350वें वर्ष पर देशभर में 2 हजार से अधिक कार्यक्रम किए, जिनमें 7 लाख से अधिक लोग सम्मिलित हुए।

murari.shukla@gmail.com

नागपुर में विश्व हिन्दू परिषद के भवन का शिलान्यास समारोह

नागपुर, 20 मार्च 2026। विश्व हिन्दू परिषद, विदर्भ प्रांत, नागपुर द्वारा आयोजित भवन शिलान्यास समारोह श्रद्धा, उत्साह और वैचारिक ऊर्जा के साथ संपन्न हुआ। दुर्गा नगर, जुना सुभेदार, अयोध्या नगर स्थित प्रस्तावित कार्यालय परिसर में आयोजित इस भव्य कार्यक्रम में संत, संघ पदाधिकारी, सामाजिक कार्यकर्ता और नागरिक बड़ी सँख्या में उपस्थित रहे। कार्यक्रम ने न केवल संगठनात्मक विस्तार का संकेत दिया, बल्कि सनातन मूल्यों, राष्ट्रसेवा और सामाजिक एकता का व्यापक संदेश भी दिया।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के परम पूजनीय सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवत, संत त्रिलोकदर्शन दास जी महाराज (सच्चिदानंद नानकधाम, गाजियाबाद), जितेंद्रनाथ महाराज (देवनाथ मठ, अंजनगांव सुर्जी), केंद्रीय संगठन महामंत्री मिलिंद परांडे, सह सरकार्यवाह कृष्ण गोपाल जी, दीपक जी तामशेट्टीवार सहित कई विशिष्ट अतिथि उपस्थित रहे। इसके साथ ही प्रसिद्ध उद्योगपति अनंतकुमार बंसल, विको वज्रदंती के डायरेक्टर देवेश पेंडारकर, राजेश गुप्ता तथा अन्य गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति ने कार्यक्रम को विशेष महत्व प्रदान किया।

कार्यक्रम में विदर्भ प्रांत के अध्यक्ष सुदर्शन शेंडे, उपाध्यक्ष नंदकिशोर दंडारे, स्वागत समिति के हेमंत जांभेकर, कोषाध्यक्ष मनीष मालानी तथा मंत्री प्रशांत तितरे ने अतिथियों का स्वागत कर आयोजन को व्यवस्थित रूप से आगे बढ़ाया। सभी अतिथियों का पारंपरिक सम्मान किया गया, जिसमें समाज के विभिन्न वर्गों की सहभागिता देखने को मिली।

संत त्रिलोकदर्शन दास जी का उद्‌बोधनः "सनातन ही सत्य है" महाराज जी ने अपने ओजस्वी भाषण में भारतीय संस्कृति और सनातन धर्म की महानता पर प्रकाश डाला।

जितेंद्रनाथ महाराज ने अपने संबोधन में विश्व हिन्दू परिषद के इस नए भवन को केवल एक कार्यालय न मानते हुए इसे "धर्मशक्ति का केंद्र" बताया।

कार्यक्रम के मुख्य वक्ता सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवत ने अपने प्रेरणादायी उद्‌बोधन में भारतीय संस्कृति की वैश्विक प्रासंगिकता को रेखांकित करते हुए समाज में एकता, समरसता और सर्वांगीण कल्याण पर विशेष जोर दिया। उन्होंने कहा, "विश्व को जोड़ने की शक्ति हमारी संस्कृति में निहित है," और इस विचार को केवल शब्दों तक सीमित न रखते हुए उसे व्यवहार में उतारने की आवश्यकता बताई।

उन्होंने अपने संबोधन में भारतीय संस्कृति के मूल सिद्धांत 'वसुधैव कुटुंबकम्' का उल्लेख करते हुए कहा कि हमारी परंपरा संपूर्ण मानवता को एक परिवार मानती है। आज जब विश्व विभिन्न प्रकार के संघर्षों, अस्थिरता और विभाजन का सामना कर रहा है, तब भारत को अपनी साँस्कृतिक विरासत के माध्यम से विश्व को एकजुट करने की भूमिका निभानी चाहिए। उन्होंने कहा कि भारत के पास वह नैतिक शक्ति और साँस्कृतिक दृष्टि है, जो दुनियाँ को संतुलन और शांति का मार्ग दिखा सकती है।

समाज में समरसता के विषय पर बोलते हुए उन्होंने स्पष्ट किया कि जब तक समाज का अंतिम व्यक्ति सुखी नहीं होता, तब तक वास्तविक सुख की कल्पना अधूरी है। उन्होंने "अंत्योदय" के विचार को महत्वपूर्ण बताते हुए कहा कि विकास का लाभ समाज के हर वर्ग तक पहुँचना चाहिए। सामाजिक भेदभाव और असमानता को समाप्त कर एक समतामूलक समाज का निर्माण करना समय की मांग है।

मंदिरों की भूमिका पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने कहा कि मंदिर केवल पूजा–अर्चना के स्थान नहीं हैं, बल्कि वे संस्कार, नैतिकता और सामाजिक जागरूकता के केंद्र भी हैं। मंदिरों के माध्यम से समाज को दिशा, अनुशासन और एकता का संदेश मिलता है। उन्होंने मंदिरों से समाज निर्माण में सक्रिय योगदान देने का आह्वान किया।

वर्तमान वैश्विक परिस्थितियों का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा कि आज विश्व अस्थिरता और असंतुलन के दौर से गुजर रहा है। ऐसे समय में भारत को अपनी परंपराओं और मूल्यों के आधार पर विश्व को स्थिरता और संतुलन प्रदान करने की जिम्मेदारी निभानी चाहिए। भारत का दर्शन संघर्ष के बजाय संवाद, प्रतिस्पर्धा के बजाय सहयोग और स्वार्थ के बजाय परमार्थ को महत्व देता है।

इसके साथ ही इस अवसर पर विश्व हिन्दू परिषद द्वारा संचालित "हिन्दू संवेदना" मासिक वृत्तपत्रिका का गुड़ी पड़वा विशेषांक भी विधिवत प्रकाशित किया गया, जिसमें सनातन परंपराओं, भारतीय नववर्ष के साँस्कृतिक महत्व एवं सामाजिक जागरण से जुड़े विविध विषयों को समाहित किया गया है।

सफल व्यवसाय के सपने को हकीकत बनाइए !

पितांबरी® शॉपी फ्रँचायसी के साथ

दैनंदिन जीवन में उपयुक्त
95
उत्पाद 195 SKUs के साथ

पितांबरी ब्रांड के साथ काम करने का अवसर

पितांबरी® अभिनव उत्पाद

३७ सालों का गौरवशाली सफर !

ग्राहकों का पसंदीदा भारतीय ब्रांड

व्यवसाय वृद्धी और आर्थिक प्रगती

पितांबरी शॉपी फ्रँचायसी के फायदे

- मर्यादित निवेश में व्यापार और पर्याप्त रिटर्न
- उत्पादों पर अच्छा मार्जिन
- वर्तमान व्यवसाय के साथ अतिरिक्त उत्पन्न
- फ्रँचायसी नवीकरण शुल्क नही

फ्रँचायसी धारक को क्या मिलेगा ?

- शुरुआत में कुछ मुल्य का माल कंपनी की ओर से दिया जाएगा*
- फ्रँचायसी शुल्क पर महिलाओं को विशेष छूट
- प्रॉडक्ट शेल्फ सुविधा उपलब्ध
- प्रसिद्धी सामग्री और बिलिंग सॉफ्टवेअर दिया जाएगा

*नियम और शर्तें लागू.

१४०+ फ्रँचायसी धारकों की तरह अपना सफल व्यवसाय शुरु करने के लिए आज ही संपर्क करें !

पितांबरी प्रॉडक्ट्स प्रा. लि.: संपर्क:- सचिन कासले - 9930329664, मनोज विचारे - 8237112426, उमेश जगताप - 7972078591, विजय घुगे - 9545707788 | टोल फ्री: 18001031299 | CIN: U52291MH1989PTC051314

"LPC DELHI, DELHI PSO, DELHI RMS, DELHI-6
email : hinduvishva@vhp.org
website : www.vhp.org

Postal Regd. No. DL-SW-01/4031/24-26
समाचार पत्र पंजी. सं. 68516/98
प्रकाशन तिथि : 28.03.2026
प्रेषण तिथि : 29-30 (अग्रिम-पाक्षिक)

OUR FASTENERS ARE USED IN EVERY SEGMENT

LPS BOSSARD
Proven Productivity

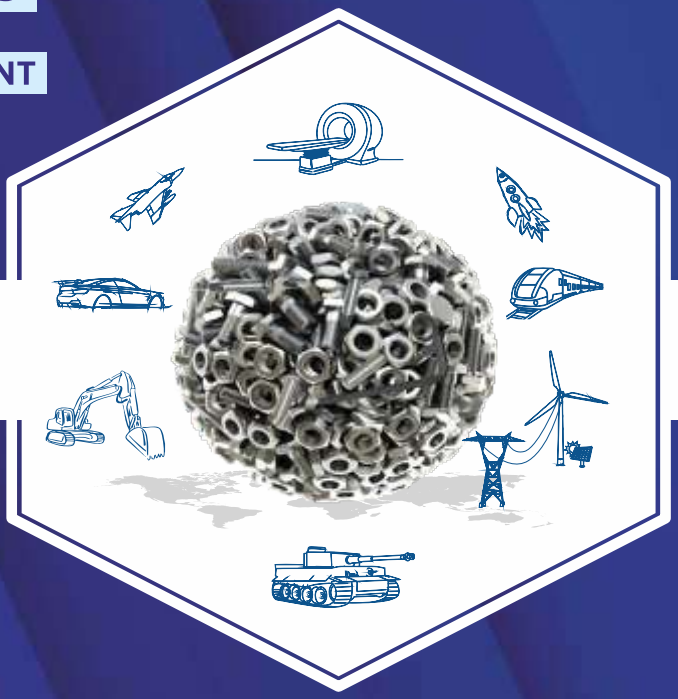

LPS Bossard Sustainable Campus

Our Social Initiatives

LPS Bossard Pvt. Ltd.
NH-10, Delhi-Rohtak Road Kharawar Bye Pass Rohtak-124001
Ph. +91-1262-205205 | india@lpsboi.com
www.bossard.com

RAJESH JAIN
MD, LPS Bossard

प्रकाशक व मुद्रक हरिशंकर द्वारा सचिव, साहित्य एवं दृक्श्राव्य सेवा न्यास की ओर से 'रॉयल प्रेस' बी–82, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया फेस–1, नई दिल्ली–110020 से छपवाकर संकटमोचन आश्रम, सेक्टर–6, रामकृष्णपुरम्, नई दिल्ली–22 से प्रकाशित। सम्पादक : विजय शंकर तिवारी